चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org/scribd

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय पाँच

कलीसिया

Third Millennium Ministries
Biblical Education For the World For Free

© 2010 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

थर्ड मिलिनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलिनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि ***मुफ्त में, पूरी दुनिया के लिये, बाइबल पर आधारित शिक्षा*** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बांटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमिडिया सेमनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिनिलियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवता में द हिस्टरी चैनल © के समान हैं। सन् 2009 में, सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलिनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवाओं की अधिक जानकारी के लिये एवं आप किस प्रकार इसमें सहयोग कर सकते हैं, आप हम से www.thirdmill.org पर मिल सकते हैं।

विषय-वस्तु सूची

पृष्ठ संख्या

1. परिचय 3
2. स्वीकृति 4
  पुराना नियम....................4
  यीशु 6
  आशय 8
    उद्देश्य....................8
    विश्वासी और अविश्वासी....................9
    जिम्मेदारियाँ .... Error! Bookmark not defined.
3. पवित्र....................12
  परिभाषा 12
  लोग 14
    दृश्य कलीसिया....................15
    अदृश्य कलीसिया 16
4. सार्वभौमिक 17
  परिभाषा 17
  दृश्य कलीसिया....................19
  अदृश्य कलीसिया 21
    एक उद्धारकर्ता....................21
    एक धर्म 22
5. संगति 24
  दृश्य कलीसिया....................24
    अनुग्रह के साधन 25
    आत्मिक वरदान 26
    भौतिक वस्तुएँ 27
  अदृश्य कलीसिया 28
    मसीह के साथ एकता....................28
    विश्वासियों के साथ एकता....................29
6. उपसंहार 30

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय पाँच

कलीसिया

1. परिचय

आधुनिक संसार में, अधिकाँश लोग जब "कलीसिया" शब्द को सुनते हैं, तो वे एक भवन के बारे में सोचते हैं जहाँ मसीही लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित होते हैं। कई बार ये भवन विशाल और अलंकृत, कला से सुशोभित खूबसूरत गिरजाघर होते हैं। कई बार ये साधारण साज-सज्जा वाले छोटे आराधनालय होते हैं। कई बार इन्हें गोदामों या दुकानों को बदलकर बनाया जाता है। कई बार ये घर, छोटी कुटिया, या मिट्टी की झोंपड़ियाँ, या गुफाएँ होती हैं, जहाँ आराधक खतरे से छिपते हैं। परन्तु *प्रेरितों के विश्वास-कथन* में, बाइबल के समान ही, "कलीसिया" शब्द मुख्यत: परमेश्वर के लोगों को बताता है, पवित्र समुदाय जो पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा पर विश्वास करने वालों के द्वारा रचित है।

यह *प्रेरितों के विश्वास-कथन* की हमारी श्रृंखला का पाँचवाँ अध्याय है। और हमने इसे "कलीसिया" शीर्षक दिया है। इस अध्याय में, हम *प्रेरितों के विश्वास-कथन* के उन कथनों को देखेंगे जो इस पवित्र संस्थान में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं।

प्रेरितों का विश्वास-कथन कलीसिया के बारे में स्पष्ट रूप से इन शब्दों में बात करता है:

> *मैं पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,*
> *सन्तों की संगति,*
> *में विश्वास करता हूँ।*

विश्वास-कथन में ये कथन पवित्र आत्मा और उसकी सेवकाई के लिए समर्पित भाग में आते हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा त्रिएकत्व का वह व्यक्ति है जो सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप में दैनिक आधार पर कलीसिया के साथ सम्मिलित है। अत:, हम पवित्र आत्मा पर अपने अध्याय में कलीसिया की चर्चा कर सकते थे। परन्तु हमने कलीसिया पर पूरे अध्याय को लगाना चुना क्योंकि यह मसीहियत और मसीह के अनुयायियों के रूप में जीवन के हमारे अनुभव के लिए आधारभूत है।

जैसा हमने एक पिछले अध्याय में बताया, बहुत से प्रोटेस्टेन्ट कलीसिया में विश्वास के अंगीकार को अजीब मानते हैं, जैसे कि कलीसिया में हमारा विश्वास परमेश्वर पर हमारे विश्वास के तुल्य हो। जब विश्वास-कथन कहता है कि हम कलीसिया *में* विश्वास करते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम उद्धार के लिए कलीसिया पर विश्वास करते हैं। उद्धार दिलाने वाला विश्वास मसीह में और केवल मसीह में है। परन्तु हम कलीसिया *में* इस अर्थ में विश्वास करते हैं कि हम बाइबल पर विश्वास करते हैं जब वह हमें कलीसिया के बारे में सिखाती है, और हमें बताती है कि कलीसिया मसीहियों के लिए महत्वपूर्ण है। और यही बात सन्तों की संगति *में* विश्वास करने के बारे में सत्य है। हम अपने उद्धार के लिए दूसरे विश्वासियों पर भरोसा नहीं करते हैं। परन्तु हम बाइबल की शिक्षा पर विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमें सुसमाचार सुनाने, सेवकाई करने, और हमारे विश्वास को मजबूत बनाने के लिए दूसरे विश्वासियों का प्रयोग करता है।

कलीसिया पर हमारा अध्याय चार केन्द्रीय शिक्षाओं में विभाजित होगा जो विश्वास-कथन में प्रतिबिम्बित हैं। पहले, हम कलीसिया की दिब्या स्वीकृति को देखेंगे। दूसरा, हम इस तथ्य पर विचार करेंगे

कि कलीसिया पवित्र है। तीसरा, हम इसके सार्वभौमिक या वैश्विक होने की बात करेंगे। और चौथा, हम इस विचार को देखेंगे कि कलीसिया एक संगति है। इनमें से प्रत्येक भाग कलीसिया की पहचान और प्रकृति को समझने में हमारी सहायता करेगा जिसकी *प्रेरितों के विश्वास-कथन* में पुष्टि की गई है। आइए हम पहले कलीसिया की दिब्या स्वीकृति को देखें।

2. स्वीकृति

आधुनिक संसार में, बहुत से ऐसे मसीही हैं जो मानते हैं कि कलीसिया अनावश्यक है - या वे कम से कम ऐसा दिखाते हैं। बहुत से मामलों में, सच्चे विश्वासी सोचते हैं कि कलीसिया जैसे संस्थान मानवीय खोज हैं जो परमेश्वर के साथ हमारे व्यक्तिगत संबंध में हस्तक्षेप करती हैं। परन्तु पवित्र वचन बहुत अलग दृष्टिकोण सिखाता है। वृहत्तर अर्थ में, कलीसिया पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य, उसके विशेष लोगों की मण्डली, और वह केन्द्रीय माध्यम है जिसके द्वारा वह उन लोगों पर अनुग्रह करता है जो उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं। पवित्र वचनों के अनुसार, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को स्थापित करने और बनाए रखने में कलीसिया अहम है।

जब हम कहते हैं कि कलीसिया परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है, तो हमारा मतलब है कि उसने इसे एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाया, और इसे अधिकार प्रदान किया है। सामान्य शब्दों में, पवित्र वचन सिखाता है कि परमेश्वर कलीसिया का अनुमोदन करता है। यह वह संस्थान है जिसे उसने संसार में अपने मिशन को पूरा करने के लिए निर्धारित किया है। जैसे स्वयं यीशु ने मत्ती 16:18 में कहा:

> *मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।* (मत्ती 16:18)

कलीसिया पापी मनुष्यों की खोज नहीं है। यीशु स्वयं कलीसिया का संस्थापक है।

इसलिए यद्यपि हम इतिहास में कलीसिया में कई कमियाँ देखते हैं, और कई बार कलीसियाएँ सुसमाचार से इतनी दूर चली जाती हैं कि वे परमेश्वर की कलीसिया नहीं रहती हैं, लेकिन हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि बेकार या अनावश्यक है। *प्रेरितों का विश्वास-कथन* इन आसान शब्दों में कलीसिया की दिब्या स्वीकृति की पुष्टि करता है:

> *मैं...कलीसिया...में...विश्वास करता हूँ।*

आपको पिछले अध्यायों से याद होगा कि *प्रेरितों का विश्वास-कथन* आरम्भिक कलीसियाओं के विश्वास के नियमों का साराँश है। और वे विश्वास के नियम पवित्र वचन के साराँश थे। अत:, जब विश्वास-कथन कलीसिया में विश्वास का अंगीकार करता है, तो यह कलीसिया के बारे में बाइबल की शिक्षा की पुष्टि करता है। और कलीसिया के बारे में बाइबल की शिक्षा का सर्वाधिक मूलभूत पहलू है कि परमेश्वर ने संसार में अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कलीसिया को नियुक्त किया।

कलीसिया की दिब्या स्वीकृति को देखते समय, हम तीन मुख्य विचारों पर ध्यान देंगे। पहला, हम कलीसिया की पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखेंगे। दूसरा, हम इस बात पर ध्यान देंगे कि अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान कलीसिया को स्थापित करने के लिए यीशु ने क्या किया। और तीसरा, हम बाइबल के इन दृष्टिकोणों के कुछ आशयों को देखेंगे। आइए पहले हम कलीसिया की पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखें।

पुराना नियम

नये नियम में कलीसिया की विचारधारा की जड़ें वास्तव में पुराने नियम में है।

> *बहुत से लोग सोचते हैं कि कलीसिया पिन्तेकुस्त के दिन शुरू हुई जब यीशु स्वर्ग में चला गया और उसने चेलों पर अपने आत्मा को उण्डेला। परन्तु मेरा विचार है कि यह कलीसिया की प्रकृति की गलत समझ है। मेरा विचार है कि कलीसिया पुराने नियम के परमेश्वर के जनों की निरन्तरता है। परमेश्वर ने अब्राहम और पुराने नियम के लोगों को बुलाया, और हम आसानी से कह सकते हैं कि यह कलीसिया है, कलीसिया की शुरूआत है। अत: कलीसिया वहाँ शुरू हुई, हमारे समय में जारी है, और यह यीशु मसीह के स्वर्ग से दुबारा आगमन के दिन तक रहेगी।* (डॉ. रायड केसिस)

नया नियम कलीसिया के लिए बहुत बार यूनानी शब्द *एकलेसिया* का प्रयोग करता है। परन्तु यह शब्द सेप्टुजिन्ट, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद से लिया गया था। पुराने नियम में, *एकलेसिया* और उसके इब्रानी समानार्थी को इस्राएलियों की मण्डली की पहचान के लिए बारम्बार प्रयोग किया गया है। हम इसे व्यवस्थविवरण 9:10, 31:30; न्यायियों 20:2; 1राजा 8:14; भजन 22:22 और 25; तथा और भी बहुत से स्थानों पर देखते हैं।

नये नियम में भी, जहाँ *एकलेसिया* कलीसिया को बताने वाला तकनीकी शब्द बन चुका है, इस शब्द का पुराने नियम इस्राएल की मण्डली के लिए प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 7:38 में, हम स्तिफनुस द्वारा अपने हत्यारों को किए प्रचार में इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> *यह वही (मूसा) है, जिस ने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उस से बातें कीं, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुँचाए।* (प्रेरितों के काम 7:38)

यहाँ, कलीसिया शब्द यूनानी *एकलेसिया* का अनुवाद है, जिसका "कलीसिया" के रूप में अनुवाद किया जाता है। यह संकेत देता है कि इस्राएल की मण्डली नये नियम की कलीसिया का पुराने नियम का रूप और पूर्ववर्ति थी।

और 1 पतरस 2:9 में, पतरस भी कलीसिया को पुराने नियम इस्राएल के नामों से संबोधित करता है। देखें उसने क्या लिखा:

> *तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो।* (1 पतरस 2:9)

यहाँ, पतरस ने कई पुराने नियम पद्यांशों को उद्धृत किया जो इस्राएल के बारे में बताते थे। और उसने इस्राएल के विशेष नामों को नये नियम की कलीसिया पर लागू किया। इस तरह, उसने संकेत दिया कि इन दोनों समूहों के बीच महत्वपूर्ण निरन्तरता है।

> *यदि हम 1 पतरस अध्याय 2 जैसे पद के बारे में सोचें जहाँ उन शीर्षकों की पूरी श्रृंखला को कलीसिया पर लागू करता है जो मूलत: पुराने नियम में इस्राएल को दिए गए थे: "तुम राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।" हम देखते हैं कि पतरस विभिन्न क्षेत्रों की कलीसियाओं के समूहों को जो मुख्यत: अन्यजाति हैं सिखा रहा है कि वे अपने आप को परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दिए गए वायदे की पूर्ति के रूप में देखें, और पहचानें कि यह उनकी पहचान है।* (डॉ. डेनिस जॉनसन)

निस्सन्देह, इसका मतलब यह नहीं है कि नये नियम की कलीसिया बिल्कुल पुराने नियम की मण्डलियों के समान ही है। वे जुड़ी हुई हैं, परन्तु वे अलग भी हैं। रोमियों अध्याय 11 में, पौलुस पुराने नियम इस्राएल की मण्डली और मसीही कलीसिया के बीच संबंध के बारे में बताने के लिए दो रूपकों का प्रयोग करता है। वह उन्हें आटे और जलपाई के वृक्ष के रूप में बताता है।

देखें रोमियों अध्याय 11 पद 16 में वह क्या लिखता है:

> *जब भेंट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गुंधा हुआ आटा भी पवित्र है: और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियाँ भी ऐसी ही हैं।* (रोमियों 11:16)

पहले, पौलुस ने कहा कि पुराने नियम की मण्डली उसी गुंधे हुए आटे का पहला पेड़ा है जिस में से नये नियम की कलीसिया बनी है।

लैव्यवस्था 23:17 में इस्राएलियों से कहा गया था कि वे अपनी रोटी की पहली उपज यहोवा को चढाएँ। पहली उपज कोई अलग फसल नहीं थी। वे पूरी फसल का भाग थीं, और पूरी फसल का प्रतिनिधित्व करती थीं। इसलिए, जब पौलुस ने कहा कि इस्राएल और नये नियम की कलीसिया उसी गुंधे हुए आटे का हिस्सा हैं, तो उसने संकेत दिया कि इस्राएल और नये नियम के मसीही दोनों एक ही संस्थान, परमेश्वर के जनों, और एक ही कलीसिया का हिस्सा हैं।

दूसरा, पौलुस ने कहा कि पुराने नियम की मण्डली पेड़ की जड़ थी, और नये नियम की कलीसिया उसी पेड़ की डालियाँ है। पौलुस ने इस उदाहरण को कई पदों में विस्तार से बताया। उसने सदियों से चली आ रही कलीसिया की तुलना जलपाई के वृक्ष से की। मुख्यत: यहूदियों से बनी पुराने नियम की कलीसिया, पेड़ का मुख्य भाग थी: जड़ें, तना, और बहुत सी शाखाएँ। और अन्यजाति मसीही जंगली जलपाई की शाखाएँ थे जिन्हें पेड़ में लगाया गया। सरल शब्दों में, अन्यजाति मसीहियों को यहूदी कलीसिया में जोड़ा गया। इसलिए, यद्यपि पौलुस के समय की कलीसिया में यहूदी और अन्यजाति दोनों थे, लेकिन उसका तना और जड़ें उसी वृक्ष के थे जो पुराने नियम के समय से था। हाँ, यह नया वृक्ष कई प्रकार से अलग है। इसे सुधारा और बनाया गया है। लेकिन अब भी यह वही वृक्ष है। इसी तरह, पुराने नियम की कलीसिया को सुधार कर नये नियम की कलीसिया बनाई गई है। वे महत्वपूर्ण रीतियों में अलग हैं, और वृद्धि के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु अब भी वे एक ही कलीसिया हैं।

अब जबकि हम पुराने नियम की पृष्ठभूमि के दृष्टिकोण से कलीसिया की स्वीकृति को देख चुके हैं, आइए देखें कि यीशु ने कलीसिया को कैसे बनाया जो पुराने नियम की कलीसिया पर आधारित थी और उसे आगे भी बढ़ाया।

यीशु

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जब यीशु आया तो उसकी सेवकाई ने संसार और परमेश्वर के लोगों पर अत्यधिक नाटकीय प्रभाव डाला। अच्छे तर्क के साथ बहुत से धर्मविज्ञानियों ने ध्यान दिया है कि यीशु ने पुरानी कलीसिया सहित, केवल पुराने क्रम को ही आगे नहीं बढ़ाया। साथ ही, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने पूर्णत: नई कलीसिया की स्थापना नहीं की। उसकी कलीसिया पुराने नियम की कलीसिया की निरन्तरता है।

सुसमाचारों में वर्णित लेखों के अनुसार यीशु ने तीन अवसरों पर कलीसिया का केवल *एकलेसिया* नाम से वर्णन किया। वास्तव में, ये ही वे स्थान हैं जहाँ मत्ती, मरकुस, लूका, या यूहन्ना में *एकलेसिया* शब्द आता है। ये तीनों पद्यांश मत्ती के सुसमाचार में हैं - एक अध्याय 16 पद 18 में और दो अध्याय 18 पद 17 में। आइए इन दोनों पदों को निकटता से देखें।

मत्ती 16:18 में यीशु ने ये शब्द कहे:

> *मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।* (मत्ती 16:18)

शब्द *ओइकोडोमेयो,* जिसका यहाँ "बनाना" के रूप में अनुवाद किया गया है, वह किसी बिल्कुल नये निर्माण, या किसी वस्तु के पुनर्निर्माण या पुन: स्थापना के बारे में बता सकता है जो पहले से ही विद्यमान है। यद्यपि यीशु ने स्पष्ट नहीं किया कि उसने इसे किस अर्थ में कहा, लेकिन रोमियों अध्याय 11 में पौलुस की शिक्षा के अनुसार हमें इस मत का पक्ष लेना चाहिए कि यीशु पुराने नियम की कलीसिया का पुनर्निर्माण और पुन: स्थापना कर रहा था।

मत्ती 18:17 में यीशु के वचन कम अस्पष्ट हैं। देखें वहाँ वह क्या कहता है:

> *यदि वह उन की भी न माने तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के जैसा जान।* (मत्ती 18:17)

इस पद में, यीशु कलीसियाई अनुशासन के बारे में बात कर रहा था। और उसका उपदेश था कि एक पश्चाताप न करने वाले व्यक्ति को कलीसिया या मण्डली के सामने लाया जाए। यीशु की सेवकाई के मूल सन्दर्भ में, एकमात्र कलीसिया जो विद्यमान थी वह पूरे क्षेत्र में फैला यहूदी आराधनालय और यरूशलेम का मन्दिर था। ये पुराने नियम इस्राएल की मण्डलियों के रूप थे, लेकिन फिर भी यीशु ने उन्हें "कलीसिया" कहा।

पुराने नियम में कहा गया था कि विवादों को पुरनियों, याजकों और न्यायियों द्वारा सुलझाया जाए - जो मण्डली के प्रतिनिधि थे जिन्हें न्याय करने के लिए नियुक्त किया गया था। इसे हम निर्गमन अध्याय 18 और व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 और 19 जैसे स्थानों पर देखते हैं। यीशु ने अपने समय में इस सिद्धान्त की पुष्टि की, अपने श्रोताओं को याद दिलाते हुए कि इस्राएल की मण्डली के अन्दर विवादों को हल करना अब भी उनकी जिम्मेदारी थी। परन्तु यीशु ने अपने शब्दों को अपनी कलीसिया में लागू करने की भी इच्छा की, जिसका उसने मत्ती अध्याय 16 में वर्णन किया था। इसीलिए मत्ती ने यीशु के शब्दों को हमारे लिए लिखा। आप देखते हैं, यीशु और मत्ती के लिए, पौलुस के समान ही, नये नियम की कलीसिया पुराने नियम इस्राएल की मण्डलियों का विकसित रूप थी। यीशु इस्राएल का स्थान कलीसिया को देने नहीं आया था; वह नये नियम की कलीसिया के रूप में इस्राएल को बचाने और पुन: स्थापित करने आया था।

जब हम पुरानी और नये नियम की कलीसियाओं के बीच निरन्तरता को देखते हैं, तो यीशु की केन्द्रीय भूमिका को पहचानना महत्वपूर्ण है जिसे वह इन दोनों कलीसियाओं को एक साथ बाँधने में निभाता है।

पहला, नया नियम यीशु को इस्राएल को परमेश्वर द्वारा दिए गए वायदों की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। जैसा हम रोमियों 8:1-4 और गलातियों 3:16-29 में देखते हैं, यीशु वफादार इस्राएली है जो परमेश्वर की वाचा का पालन करता है और परमेश्वर द्वारा इब्राहीम और मूसा से प्रतिज्ञा की गई सारी आशीषों को प्राप्त करता है। और जैसा हम लूका 1:32 और प्रेरितों के काम 2:31-33 में सीखते हैं, वह दाऊद का पुत्र है जो दाऊद के सिंहासन को पुन: स्थापित करता है और इस्राएल और यहूदा पर राज करता है। यीशु ने अतीत से संबंध विच्छेद नहीं किया। वह पुराने नियम की कलीसिया की पूर्ति है, उसका सबसे सिद्ध सदस्य और सेवक।

और दूसरा, यीशु नये नियम की कलीसिया का संस्थापक है, जिसने पुन: स्थापना और नवीनीकरण द्वारा असफल होती पुराने नियम की कलीसिया को नये नियम की कलीसिया में रूपान्तरित कर दिया।

पवित्र वचन इफिसियों 5:23 और कुलुस्सियों 1:18 में उसे कलीसिया का सिर कहता है। इफिसियों 5:22-33 और प्रकाशितवाक्य 19:1-10 में वह कलीसिया का पति है। और यीशु ही कलीसिया को नियुक्त करता है कि वह मत्ती 28:18-20 में यीशु द्वारा दी गई महान आज्ञा के अधिकार को प्राप्त करे। यीशु कलीसिया से प्रेम करता है, उसे स्वीकृति देता है और अधिकार देता है।

> *पुराने नियम की कलीसिया का यीशु का साथ संबंध, ठीक वैसा ही है, जैसा नये नियम की कलीसिया का यीशु के साथ संबंध है। कुछ मसीहियों के लिए, पुराना नियम कलीसिया शब्द ही अजीब है। हम सोच सकते हैं कि कलीसिया का जन्म पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के काम दूसरे अध्याय में हुआ। लेकिन, यदि हम कलीसिया को परमेश्वर के ऐसे लोगों के रूप में देखते हैं जिनके साथ परमेश्वर ने वाचा बान्धी है, परमेश्वर के लोग जिन्हें परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के कार्य के द्वारा छुटकारा दिया है, तो पुराने नियम की कलीसिया विश्वासियों की देह है जो उस दिन के इन्तजार में हैं जब परमेश्वर मसीह के आने पर उनके उद्धार के कार्य को पूरा करेगा। और इस प्रकार पुराने नियम की कलीसिया परमेश्वर के अनुग्रह पर, परमेश्वर के बहाए हुए लहू पर, क्रूस पर बहाए यीशु मसीह के लहू पर विश्वास करती थी। पुराने नियम के मसीही, पुराने नियम के विश्वासी, पुराने नियम की कलीसिया के सदस्य हमारे प्रभु यीशु द्वारा पूर्ण किए गए कार्य का इन्तजार कर रहे हैं। वे परमेश्वर के सर्व-सामर्थी, मुफ्त अनुग्रह और करूणा पर विश्वास करते थे जो उनके पापों को क्षमा करके परमेश्वर के साथ उनके संबंध को पुन: स्थापित करेंगे। अत:, मामले के केन्द्र में, पुराने नियम के विश्वासी और पुराने नियम की कलीसिया का संबंध, परमेश्वर के साथ उनका संबंध बिल्कुल वैसा ही है जैसा परमेश्वर के साथ हमारा, नये नियम के विश्वासियों और नये नियम की कलीसिया का संबंध है।* (डॉ. सैमुएल लिंग)

अब तक हमने पुराने नियम की पृष्ठभूमि और यीशु की संसार में सेवकाई के दृष्टिकोण से कलीसिया की स्वीकृति को देखा। अब, हम इन बिन्दुओं के कुछ आशयों को देखने के लिए तैयार हैं।

आशय

जब हम महसूस करते हैं कि यीशु ने नये नियम की कलीसिया को पुराने नियम इस्राएल के विकास और पुन: स्थापना के लिए नियुक्त किया, तो इसका एक महत्वपूर्ण आशय है कि पुराने नियम में इस्राएल और नये नियम में मसीही कलीसिया के बीच मूलभूत निरन्तरता है। व्यवहारिक स्तर पर, हमें नये नियम में परमेश्वर के लोगों के समुदाय से अपनी पुराने नियम की जड़ों को प्रतिबिम्बित करने की अपेक्षा रखनी चाहिए। निस्सन्देह, कुछ बातें अलग हैं, और नया नियम इन बदलावों का संकेत देता है। परन्तु नया नियम यह भी सिखाता है कि कलीसिया बहुत कुछ इस्राएल के समान है।

निरन्तरता के इतने अधिक बिन्दू हैं कि हम उन सबका वर्णन नहीं कर सकते हैं। परन्तु हम उन में से तीन को देखेंगे। पहला, पुराने नियम की कलीसिया और नये नियम की कलीसिया के बीच उद्देश्य की बड़ी निरन्तरता है।

उद्देश्य

धर्मविज्ञानी प्राय: संसार के इतिहास का तीन चरणों में संक्षेपण करते हैं: सृष्टि, पाप, और छुटकारा। सृष्टि के चरण में, जो उत्पत्ति 1 और 2 अध्यायों में वर्णित है, परमेश्वर ने संसार, पौधों, जीवों, और मनुष्य को बनाया। और संसार के एक विशेष हिस्से में, उसने अदन की वाटिका बनाई। और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, यह मनुष्य की जिम्मेदारी थी कि वह पृथ्वी में भर जाए और उस पर अधिकार करे, उसे अदन की वाटिका के समान, परमेश्वर की पवित्र, प्रकट उपस्थिति के लिए उपयुक्त स्थान बनाए।

पाप के चरण में, जो उत्पत्ति अध्याय 3 में लिखित है, मनुष्य ने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया और अदन की वाटिका से निकाल दिया गया। और मानव के पाप में गिरने से, सम्पूर्ण सृष्टि भ्रष्ट हो गई। पौलुस ने रोमियों 8:20-22 में इसका वर्णन किया।

शेष इतिहास छुटकारे के चरण को बनाता है, जिस में परमेश्वर मानवता को पुन: सिद्ध अवस्था में लाने, और मानवता के द्वारा सृष्टि को पुन: उसकी प्राचीन अवस्था में लाने के लिए कार्य कर रहा है। छुटकारे की अवधि की अन्तिम स्थिति होगी नया आकाश और नई पृथ्वी जिसके बारे में हम यशायाह 65:17 और 66:22, 2 पतरस 3:13, और प्रकाशितवाक्य 21:1 में पढ़ते हैं। और मनुष्य और सृष्टि का यह छुटकारा सदा से दोनों नियमों की कलीसियाओं के लिए परमेश्वर का उद्देश्य रहा है।

आधुनिक संसार में, कलीसिया अब भी सृष्टि की पुन: स्थापना के इस लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। नये नियम की शिक्षाओं की प्राथमिकताओं के अनुसार, हम इसे मुख्यत: सुसमाचार के प्रचार द्वारा करते हैं, यह जानते हुए कि मसीह में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति छुटकारे की अन्तिम अवस्था की ओर एक और कदम का प्रतिनिधित्व करता है। हम इसे संसार में मसीहियों के रूप में रहने, पड़ोसियों के प्रति मसीह के प्रेम को दिखाने, और परमेश्वर की महिमा, आदर, और चरित्र को प्रकट करने के लिए अपने आस-पास की संस्कृतियों को बदलने के द्वारा भी करते हैं। और हम इस आशा और प्रार्थना के साथ यह करते हैं कि एक दिन यीशु छुटकारे के कार्य को पूरा करने के लिए वापस आएगा।

वर्तमान युग में पुराने नियम की कलीसिया और नये नियम की कलीसिया के बीच निरन्तरता का दूसरा बिन्दू यह है कि परमेश्वर के लोगों की दोनों मण्डलियों में विश्वासी और अविश्वासी शामिल हैं।

विश्वासी और अविश्वासी

याद रखें कि पुराने और नये नियम में, परमेश्वर की कलीसिया कभी सिद्ध नहीं थी। पुराने नियम में, कुछ प्राचीन इस्राएली परमेश्वर के प्रति वफादार थे और उन्होंने परमेश्वर की आशीषों को पाया। परन्तु दूसरे बहुत से लोगों ने अविश्वास में परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया और ईश्वरीय शाप के भागी बन गए। इसे हम सम्पूर्ण पुराने नियम में देखते हैं, परन्तु यह संभवत: परमेश्वर की वाचा की आशीषों और शापों के साराँशों में सर्वाधिक स्पष्ट है, जिन्हें हम लैव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 27-30 अध्यायों में पाते हैं।

और यही बात यीशु के अनुयायियों की मण्डली, नये नियम की कलीसिया के बारे में भी सत्य है। हमारी कलीसियाओं में सदा विश्वासियों के बीच अविश्वासी भी मिले रहते हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के बीच यहूदा धोखेबाज था। इसे विशेष रूप से यूहन्ना 6:70 और 71 में बताया गया है, और इसे हम उसके द्वारा मसीह को धोखा देने में भी देखते हैं। कलीसिया की मिली-जुली प्रकृति प्रकाशितवाक्य 2 और 3 अध्यायों में कलीसियाओं को लिखे पत्रों में भी स्पष्ट है। प्रकाशितवाक्य के ये अध्याय कलीसिया के सच्चे विश्वासियों से अपेक्षा रखते हैं कि वे जय पायेंगे। परन्तु वे यह चेतावनी भी देते हैं कि जय न पाने वाले अपने अविश्वासी दिलों को प्रकट करेंगे। और 1 यूहन्ना की पत्री का अधिकाँश भाग कलीसिया में सच्चे और झूठे विश्वासियों की पहचान के लिए समर्पित है। इससे बढ़कर, बहुत से अन्य पद्यांश कलीसिया में झूठे शिक्षकों की चेतावनी देते हैं, या विश्वास करने वालों को अपने विश्वास को साबित करने के लिए अन्त तक स्थिर रहने की प्रेरणा देते हैं।

2 कुरिन्थियों 13:5 में, पौलुस ने भी इस सत्य को पहचाना, और लोगों को इस पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। देखें उसने वहाँ क्या लिखा:

> *अपने आप को परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जांचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो।* (2 कुरिन्थियों 13:5)

पौलुस चाहता था कि हर व्यक्ति इस बात को पहचान ले कि कलीसियाई सदस्यता, और बपतिस्मा, और विश्वास का अंगीकार जैसी बातें यीशु मसीह में उद्धार देने वाले विश्वास के निश्चित चिन्ह नहीं हैं। इन्हें तो वे लोग भी करते हैं जिन्होंने वास्तव में कभी मसीह पर विश्वास किया ही नहीं। इसलिए, पौलुस ने कलीसिया में लोगों को प्रेरित किया कि वे अपने आप को जांचें, निश्चित करें कि वे उद्धार के लिए मसीह पर वास्तव में भरोसा कर रहे हैं या नहीं।

निस्सन्देह, मनुष्य होने के नाते, हम दूसरे व्यक्ति के दिल की अवस्था को नहीं जान सकते हैं। हम केवल उनके कार्यों को देख सकते हैं और उनके शब्दों को सुन सकते हैं। इसलिए, प्राय: हमारे लिए यह बताना असम्भव होता है कि सच्चा विश्वासी कौन है। परन्तु फिर भी इस ज्ञान के द्वारा, कि हमारी मण्डलियों में अविश्वासी हो सकते हैं, अपने आप को और कलीसिया में दूसरों को देखने की हमारी रीति पर प्रभाव पड़ना चाहिए। हमें पूरी कलीसिया को निरन्तर सिखाना और सुसमाचार का प्रचार करना याद रखना चाहिए ताकि वे लोग भी उद्धार पाएँ जो अब तक विश्वास में नहीं आए हैं - यद्यपि हम नहीं जानते होंगे कि वे कौन हैं। हमें कलीसिया में उन लोगों को स्वीकार करना चाहिए जो परमेश्वर की खोज में हैं, उन्हें कलीसिया में आने से निरूत्साहित न करें चाहे उन्होंने अभी मसीह पर विश्वास न किया हो। और हमें दूसरों के साथ धैर्यवान होना चाहिए, यह जानते हुए कि विश्वास और परिपक्वता में अत्यधिक विविधता पाई जाती है, उन लोगों में भी जो लम्बे समय से कलीसिया में हैं।

पुराने नियम की कलीसिया और नये नियम की कलीसिया के बीच निरन्तरता का तीसरा बिन्दू है कि परमेश्वर के सामने उनकी जिम्मेदारियाँ समान थीं।

ज़िम्मेदारियाँ

दोनों नियमों के परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने, उसके राज्य को संसार में फैलाने, और उसकी महिमा करने का उत्तरदायित्व दिया गया था। परमेश्वर के लिए प्रेम के संबंध में, व्यवस्थाविवरण 6:5 और 6 ने पुराने नियम की कलीसिया को परमेश्वर से दिल से प्रेम करना और पूरे मन से उसकी व्यवस्था को मानना सिखाया।

इसी तरह, नये नियम की कलीसिया को भी परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी व्यवस्था को मानने के लिए बुलाया गया है। जैसे यीशु ने मत्ती 22:37 में सिखाया, सम्पूर्ण दिल से परमेश्वर से प्रेम करना व्यवस्था की सबसे बड़ी आज्ञा है। और जैसे 1 यूहन्ना 5:3 में यूहन्ना से सिखाया, सम्पूर्ण दिल से परमेश्वर से प्रेम करने का परिणाम सम्पूर्ण दिल से उसकी आज्ञाओं को मानना होता है।

> *एक सवाल लोग प्राय: पूछते हैं कि क्या नये नियम की कलीसिया के लिए पुराने नियम की व्यवस्था को मानना जरूरी है। और उत्तर है सुस्पष्ट हाँ और नहीं। नहीं इस अर्थ में कि पुराने नियम तोराह में पाए जाने वाले उन विशिष्ट आदेशों को वास्तव में हमसे हटा लिया गया है। हमें अपने पुत्रों का खतना करने की आवश्यकता नहीं है। हमें वर्ष में तीन बार मन्दिर में जाने की आवश्कता नहीं है। हमें आवश्यकता नहीं है... और आप इसकी सूची बना सकते हैं। वास्तव में, यह यरूशलेम की सभा का विचार-विमर्श था जो प्रेरितों के काम 15 में लिखित है। लेकिन, पुराने नियम तोराह का उद्देश्य क्या है? इस अर्थ में कि तोराह परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को प्रकट करती है और वह चरित्र और स्वभाव जिसे हमसे अपनाने की अपेक्षा की जाती है, उस अर्थ में, हाँ, तोराह अब भी लागू है। और मेरा विचार है कि आप इसे पौलुस की पत्रियों में देखते हैं। पौलुस अपने पाठकों से कह सकता है, "नहीं, तुम स्वतन्त्र हो। तुम्हें उन सब बातों को करने की आवश्यकता नहीं है। और तुम स्वतन्त्र हो इसलिए, निस्सन्देह, तुम चोरी नहीं करोगे, तुम झूठ नहीं बोलोगे, तुम लालच नहीं करोगे, तुम व्यभिचार नहीं करोगे।" अत:, क्या मसीहियों को अपने उद्धार के लिए तोराह को*

मानना आवश्यक है? बिल्कुल नहीं। परन्तु उन लोगों के रूप में जिन्हें मुफ्त में उद्धार दिया गया है, हमसे अपेक्षित है कि हम परमेश्वर के जीवन को प्रदर्शित करें? हाँ। (डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट)

ध्यान दें कि पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के राज्य को फैलाना था। पुराने नियम की कलीसिया जानती थी कि उत्पत्ति 17:4-5 में, परमेश्वर ने वायदा किया था कि इब्राहीम बहुत सी जातियों का पिता बनेगा। और जैसा रोमियों 4:13 में पौलुस ने सिखाया, पुराने नियम की कलीसिया जानती थी कि इस वायदे ने उन्हें जिम्मेदारी दी कि वे विश्वास के द्वारा पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाएँ। इसी प्रकार, नये नियम की कलीसिया प्रत्येक देश में सुसमाचार को पहुँचाने के द्वारा अब भी इस योजना को पूरा कर रही है। जैसे यीशु ने मत्ती 28:19 में अपनी कलीसिया को आज्ञा दी:

जाओ और सारी जातियों को चेले बनाओ। (मत्ती 28:19)

पुराने नियम इस्राएल और नये नियम की कलीसिया की तीसरी समान जिम्मेदारी परमेश्वर की महिमा करना थी। पुराने नियम की कलीसिया के लिए, इसे हम भजन 86:12; भजन 115:18; और पुराने नियम के संसार के बारे में नये नियम के विवरणों में भी देखते हैं, जैसे प्रेरितों के काम 17:24-28. इस तथ्य का यह भी निहितार्थ है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, जैसा उत्पत्ति 1:27 सिखाता है। पुराने नियम के संसार में, राजाओं की मूर्तियाँ होती थीं जो लोगों को राजाओं से प्रेम करने, आज्ञा मानने और उनकी महिमा करने की याद दिलाती थीं। परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, मनुष्यों को परमेश्वर की महिमा करने के लिए बनाया गया है।

और इसी प्रकार, नये नियम की कलीसिया भी परमेश्वर की महिमा करने के लिए है। यह 1 कुरिन्थियों 10:31, 1 पतरस 4:11, प्रकाशितवाक्य 4:11, और बहुत से अन्य स्थानों पर सिखाया गया है।

परमेश्वर द्वारा कलीसिया को दिए गए उत्तरदायित्व बोझ नहीं हैं - यदि हम मसीह में हैं। यदि हमें अपनी योग्यता के आधार पर परमेश्वर के सामने खड़ा होना होता, तो हम अपनी जिम्मेदारियों के भार तले कुचले जाते। परन्तु मसीह में, कलीसिया में सच्चे विश्वासी दण्ड से मुक्त हैं, असफलता के भय के बिना परमेश्वर के राज्य को फैलाने, उसकी व्यवस्था को मानने, और उसकी महिमा के लिए कार्य कर सकते हैं। निस्सन्देह, सफलता निश्चित है। यद्यपि हमें अल्पकालिक गतिरोधों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन इतिहास परमेश्वर की निश्चित विजय की ओर बढ़ रहा है। और यह कलीसिया के द्वारा बढ़ रहा है। अत:, हम जितने अधिक आज्ञाकारी होंगे - जितनी अधिक अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करेंगे - उतनी ही जल्दी परमेश्वर अपने राज्य को उसकी महिमामय पूर्ति में ले आएगा।

अपनी आरम्भिक अवस्थाओं से कलीसिया के पुराने नियम में एक ऐसी देह के रूप में विकास को देखने से जिसका नये नियम में यीशु ने समर्थन किया, यह स्पष्ट है कि कलीसिया पूरी तरह परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है। कलीसिया का अस्तित्व इस कारण है क्योंकि परमेश्वर चाहता है यह बनी रहे, और इसलिए क्योंकि यह उसके उद्देश्य को पूरा करती है। यह केवल मानवीय खोज नहीं है। और यह बाइबल के धर्म का भ्रष्ट रूप नहीं है। यह मसीह की दुल्हन और देह है, परमेश्वर की प्रिय, और उसकी सेवा और महिमा के लिए समर्पित।

कलीसिया की स्वीकृति की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम अपने दूसरे मुख्य विषय पर आने के लिए तैयार हैं: यह तथ्य कि कलीसिया पवित्र है।

3. पवित्र

बाइबल में, पवित्रता के विचार को बताने के लिए बहुत से शब्दों का प्रयोग किया गया है। नये नियम में, कलीसिया को पवित्र या शुद्ध की गई बताया गया है। और जो लोग कलीसिया के भाग हैं उन्हें सन्त कहा गया है। ये तीनों शब्द - पवित्र, शुद्ध किया गया और सन्त - यूनानी के एक ही शब्द समूह से आते हैं। "पवित्र" विशेषण *हगियोस* का अनुवाद है। "शुद्ध किया गया" *हगियाज़ो* क्रिया से है, जिसका अर्थ है पवित्र बनाना। और "सन्त" *हगियोस* संज्ञा से है, अर्थ है पवित्र व्यक्ति।

पुराने नियम में, इब्रानी शब्द भी इन्हीं विचारों को प्रकट करते हैं जैसे विशेषण *कादोश,* अर्थ पवित्र; क्रिया *कादाश,* अर्थ पवित्र बनाना; और संज्ञा *कोदेश,* अर्थ पवित्र व्यक्ति।

अब, जब हम पवित्रता की बात करते हैं, तो बहुत से मसीहियों का मानना है कि पवित्रता वह है जो परमेश्वर को सृष्टि से अलग ठहराती है। प्राय: यह कहा जाता है कि परमेश्वर की पवित्रता उसके पूरी तरह अलग होने, या अपनी सृष्टि से पूर्णत: अलग होने का गुण है। परन्तु पवित्र वचन में "पवित्र" शब्द को केवल इसी अर्थ में प्रयोग नहीं किया गया है। बाइबल प्राणियों या वस्तुओं को भी पवित्र कहती है जब उनमें विशेष गुण हों जो परमेश्वर की पवित्रता को प्रतिबिम्बित करें। और इसी अर्थ में *प्रेरितों का विश्वास-कथन* कहता है कि कलीसिया पवित्र है।

हम कलीसिया के पवित्र होने के विचार को दो भागों में देखेंगे। पहला, हम "पवित्र" शब्द की परिभाषा को देखेंगे। और दूसरा, हम इस परिभाषा का प्रयोग उन लोगों की पहचान करने के लिए करेंगे जो पवित्र हैं। आइए पवित्रता की बाइबल की परिभाषा से शुरू करें।

परिभाषा

पवित्र वचन में पवित्रता का विचार कठिन है। परन्तु यह कहना सही है कि जब बाइबल किसी व्यक्ति या वस्तु को पवित्र कहती है, तो मूलभूत विचार यह है कि वह नैतिक रूप से शुद्ध है, और एक अर्थ में, "पवित्र" उन लोगों या वस्तुओं को भी बताता है जिन्हें परमेश्वर की विशेष सेवा के लिए अलग किया गया है।

आइए हम नैतिक शुद्धता से शुरू करके, इस परिभाषा के दोनों पहलुओं को देखें। जब हम कहते हैं कि कोई व्यक्ति या वस्तु नैतिक रूप से शुद्ध है, तो हमारा मतलब होता है कि यह पाप और भ्रष्टाचार से मुक्त है। नैतिक शुद्धता के अर्थ में, पवित्रता की जड़ें परमेश्वर के चरित्र में है। पवित्र वचन परमेश्वर को बहुत से स्थानों पर पवित्र कहता है, जैसे 2 राजा 19:22, नीतिवचन 9:10, यशायाह 30:11-15, और 1 यूहन्ना 2:20 में।

> *यह केवल इतना नहीं है कि परमेश्वर हम से बड़ा है; यह केवल इतना नहीं है कि परमेश्वर असीम और हम सीमित हैं, परन्तु यह कि नैतिक रूप से वह हम से अलग है। उसमें कोई अन्धकार या बदलने वाली छाया नहीं है। उसमें कोई बुरा आवेग या गलत करने की प्रवृत्ति नहीं है। उसमें बुराई करने का लेशमात्र भी संकेत या इच्छा नहीं है।* (डॉ. जे. लिगोन डंकन तृतीय)

परमेश्वर पूर्णत: पवित्र है, इसलिए जो कुछ भी पापपूर्ण उसकी उपस्थिति में आता है वह उसके न्याय और क्रोध के अधीन होता है। इसे हम 1 शमूएल 6:20, 2 राजा 24:3, और इब्रानियों 12:14 जैसे स्थानों पर देखते हैं। यद्यपि परमेश्वर कुछ समय के लिए न्याय को रोक सकता है, लेकिन उसकी पवित्र उपस्थिति अन्तत: उन्हें नाश कर देगी जिनके पापों को ढांपा नहीं गया है। इसलिए, उसकी उपस्थिति में जाने से पहले किसी भी व्यक्ति या वस्तु को पवित्र किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यशायाह 6:3-7 में यशायाह के शब्दों को देखें:

> *(साराप) एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे थे: सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है;...तब मैं ने कहा, हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठ वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ; क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आंखों से देखा है! तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया। और उस ने उस से मेरे मुंह को छूकर कहा... तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए।* (यशायाह 6:3-7)

इस पद्यांश में, यशायाह भयभीत हो गया कि वह पवित्र यहोवा की विशेष उपस्थिति में अपने अपराध या पाप के कारण नाश हो जाएगा। अत:, साराप, परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने, परमेश्वर की पवित्र वेदी पर से एक गर्म अंगारा उठाकर यशायाह के पाप को दूर कर दिया। इस शुद्धिकरण से, यशायाह पाप से शुद्ध हो गया - वह पवित्र बन गया। और अपनी नई पवित्रता के कारण, वह न्याय का भागी बने बिना परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हो सका।

जैसा हम यशायाह अध्याय 6 में देखते हैं, परमेश्वर की पवित्रता उसका एक सूचनीय गुण है - एक गुण जो उसकी सिद्ध और पूर्ण विशेषता है, परन्तु वह सीमित तरीकों से उसकी सृष्टि की विशेषता भी बन सकता है। विश्वासियों के लिए पवित्र बनने की बाइबल की बहुत सारी आज्ञाओं के पीछे परमेश्वर की यह सूचनीय पवित्रता है, जैसे इफिसियों 1:4, इब्रानियों 12:14, और 1 पतरस 1:15,16 में। हमें परमेश्वर की तरह नैतिक रूप से शुद्ध बनने का प्रयास करना है। निस्सन्देह, हमारी अपनी सामर्थ से हम इस प्रयास में कभी सफल नहीं हो सकते। परन्तु स्वयं मसीह में सिद्ध नैतिक शुद्धता है। और हम उस में हैं, उस की धार्मिकता हमें दी गई है, और हमें पूर्णत: शुद्ध, पाप और अशुद्धता से पूरी तरह मुक्त गिना गया है।

पवित्र शब्द की हमारी परिभाषा का दूसरा पहलू है कि यह ऐसे लोगों या वस्तुओं को बताता है जो परमेश्वर की विशेष सेवा के लिए अलग किए गए हैं। इस अर्थ में, वस्तुएँ पवित्र हो सकती हैं चाहे हम नैतिक रूप से शुद्ध न हों। केवल एक उदाहरण के लिए, देखें पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7:14 में क्या लिखा:

> *क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है।* (1 कुरिन्थियों 7:14)

यहाँ, पौलुस ने कहा कि जब एक विश्वासी का अविश्वासी से विवाह हुआ हो, तो अविश्वासी पवित्र बन जाता है, या दूसरे अनुवादों के अनुसार, अविश्वासी को "शुद्ध किया जाता है।" विचार यह है कि अविश्वासी परमेश्वर के साथ समान हो जाता है और उसकी सेवा के लिए उपयोगी बनाया जाता है - यद्यपि अविश्वासी को परमेश्वर द्वारा मसीह में नैतिक रूप से शुद्ध नहीं किया गया है।

कुछ मसीही इस विचार को अजीब मानते हैं कि परमेश्वर अपूर्ण और अशुद्ध लोगों को अपनी सेवा के लिए अलग करता है। परन्तु यदि हम इसके बारे में सोचें, बाइबल ऐसे बहुत से अविश्वासियों का उदाहरण देती है जिन्हें परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए अलग किया। संभवत: इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह तथ्य है कि प्रेरित यहूदा ने हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता को धोखा दिया। जैसा स्वयं यीशु ने सिखाया, यहूदा को उसी उद्देश्य के लिए चुना गया था। और इस धोखे के परिणामस्वरूप परमेश्वर को सर्वाधिक शुद्ध, सर्वाधिक पवित्र भेंट चढ़ाई गई - उसके पुत्र की अनमोल मृत्यु। और यदि परमेश्वर दुष्ट अविश्वासियों को भी अपनी सेवा के लिए प्रयोग कर सकता है, तो उस से प्रेम करने वाले पवित्र लोगों की विशेष सेवा के द्वारा उसे कितनी अधिक महिमा मिलेगी?

अब, जैसा हमने देखा, बाइबल में पवित्रता के विचार के कई आयाम हैं। इसलिए हमें यह समझने में सावधान होना चाहिए कि जब पवित्र वचन कलीसिया के वर्णन के लिए “पवित्र,” या “शुद्ध किया गया” या “सन्तों” जैसे शब्दों का प्रयोग करता है जो उनका क्या मतलब है। कई बार, बाइबल इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करती है कि कलीसिया में सच्चे विश्वासी नैतिक रूप से शुद्ध होते हैं क्योंकि मसीह की पवित्रता उन्हें दी गई है। दूसरे समयों पर, यह ऐसे लोगों को बताती है जो परमेश्वर की विशेष सेवा के लिए संसार से अलग किए गए हैं, चाहे वे सच्चे विश्वासी न हों। और कुछ मामलों में, यह इस विचार को बताती है कि सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर की विशेष सेवा के लिए अलग किया गया है।

चाहे जो भी हो, एक बात हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु जो पवित्र है वह परमेश्वर के लिए विशेष है। हम परमेश्वर के नाम का सम्मान करते हैं, उसे व्यर्थ में लेने से इनकार करते हैं, क्योंकि वह पवित्र है। हम बाइबल को मानते हैं क्योंकि यह हमारे पवित्र परमेश्वर का पवित्र वचन है। हम जीवन के हर पहलू में नैतिक शुद्धता का सम्मान करते हैं और उसके लिए प्रयास करते हैं, यह जानते हुए कि प्रभु हमें पवित्र जीवन के लिए बुलाता है। और हम पवित्र कलीसिया में भाग लेते हैं और उसके अधीन रहते हैं। जहाँ कहीं पवित्रता है, वहाँ परमेश्वर का हाथ है, और हम इसके सम्मान का विशेष ध्यान रखते हैं।

“पवित्र” की इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, आइए हम उन लोगों की पहचान करने के लिए इसका प्रयोग करें जो पवित्र हैं।

लोग

विस्तृत अर्थ में, बाइबल लोगों को तब “पवित्र” कहती है जब परमेश्वर की विशेष सेवा में उपयोगी बनने के लिए उन्हें शेष संसार से अलग किया जाता है। उदाहरण के लिए, सम्पूर्ण पुराने नियम इस्राएल को निरन्तर “पवित्र” कहा जाता था क्योंकि परमेश्वर ने उस जाति के साथ वाचा बांधी थी। हम इसे निर्गमन 19:5,6; व्यवस्थाविवरण 7:6-9; 28:9; और यहेजकेल 37:26-28 जैसे स्थानों पर देखते हैं।

और यह विषय नये नियम की कलीसिया में भी जारी रहता है। उदाहरण के लिए, लूका 1:72 बताता है कि यीशु परमेश्वर की पवित्र वाचा को पूरा करने आया है। और चूँकि कलीसिया को नई वाचा का नवीनीकृत और पुन: स्थापित इस्राएल माना जाता है, इसलिए यह भी पवित्र है। हम इसे कुलुस्सियों 3:12, इब्रानियों 10:29, और कई अन्या स्थानों पर देखते हैं। एक उदाहरण, 1 पतरस 2:9 में नये नियम की कलीसिया के लिए पतरस के शब्दों को सुनें:

> *तुम एक चुना हुआ वंश, राज-पदधारी याजकों का समाज, पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।* (1 पतरस 2:9)

यहाँ, पतरस पुराने नियम के कई पद्यांशों का उपयोग करता है जो इस्राएल की पवित्रता को बताते हैं, परन्तु वह उन्हें कलीसिया पर लागू करता है। उसका बिन्दू यह था कि पुराने और नये नियम दोनों में कलीसिया वही एक पवित्र समूह है।

जैसा हमने देखा, लेकिन, इस्राएल या नये नियम की कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति सच्चा विश्वासी नहीं था। फिर भी, उन सब को पवित्र माना गया क्योंकि वे परमेश्वर की वाचा के समुदाय के हिस्से थे, अर्थात्, वे लोग जो परमेश्वर के साथ वाचा में थे।

वाचा के समुदाय में विश्वासियों के लिए, उनकी पवित्रता अविश्वासियों की पवित्रता से बढ़कर थी। अविश्वासी केवल इसी कारण पवित्र थे क्योंकि उन्हें परमेश्वर के लिए अलग किया गया था। परन्तु विश्वासी न केवल इस कारण पवित्र थे कि उन्हें अलग किया गया था, बल्कि इस कारण भी कि मसीह में वे नैतिक

रूप से शुद्ध और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थे। निस्सन्देह, लक्ष्य हमेशा यह था कि सम्पूर्ण वाचा का समुदाय विश्वास करे - हर व्यक्ति परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे और नैतिक रूप से शुद्ध जीवन बिताए।

पवित्र लोगों के बारे में सोचने का एक सहायक तरीका दृश्य कलीसिया और अदृश्य कलीसिया के बीच पारम्परिक अन्तर में पाया जा सकता है। आइए हम दृश्य कलीसिया से शुरू करके इन में से प्रत्येक श्रेणी को देखें।

दृश्य कलीसिया

> *दृश्य कलीसिया वह कलीसिया है जिसे हम देख सकते हैं, इस अर्थ में स्पष्टत: दृश्य है। दृश्य कलीसिया, वे लोग हैं जो संसार में कलीसिया होने का दावा करते हैं। वे सारे संस्थान जो यीशु मसीह के पीछे चलने* का दावा करती हैं, *आज संसार में परमेश्वर के उद्देश्य और वचन का पालन करने का दावा करती हैं। इसमें बहुसंख्य संस्थान शामिल हैं, इसमें वे लोग शामिल हैं जो किसी विशेष संस्थान से संबंधित नहीं हैं लेकिन स्वयं को मसीह का अनुयायी मानते हैं।* (डॉ. मार्क स्ट्रॉस)

किसी भी समय, लोगों के दिलों की अवस्था का ध्यान रखे बिना, वह प्रत्येक व्यक्ति दृश्य कलीसिया में शामिल है जो किसी एकत्रित कलीसिया में नियमित भाग लेता है। कई ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा लोगों को दृश्य कलीसिया का हिस्सा गिना जा सकता है। उन्हें परमेश्वर की वाचा में प्रमाणित किया जा सकता है, जैसे नये नियम में बपतिस्मा, या पुराने नियम में खतना। या वे मसीह पर विश्वास का अंगीकार कर सकते हैं। उन कलीसियाओं में जहाँ आधिकारिक सदस्यता नहीं रखी जाती, या जो वाचा की पुष्टि करने के रीति-रिवाजों जैसे बपतिस्मा को नहीं मानते, उन्हें वाचा के सदस्य माना जा सकता है केवल इसलिए क्योंकि वे निरन्तर कलीसिया की शिक्षा को मानते हैं। या, जैसे पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7:14 में सिखाया, उनके पति या पत्नी विश्वासी हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, पुराने नियम में, इस्राएल की सम्पूर्ण जाति कलीसिया का हिस्सा थी, यद्यपि हर व्यक्ति के पास उद्धार देने वाला विश्वास नहीं था। वे केवल उस जाति में शामिल थे। इससे आगे, जैसा परमेश्वर ने उत्पत्ति 17 में निर्देश दिया, पुरूषों के खतने के द्वारा उन्हें परमेश्वर की वाचा में प्रमाणित किया गया था।

नये नियम में, हम कुछ ऐसा ही देखते हैं। कलीसिया की सभाओं में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कलीसिया का हिस्सा माना जाता था। इसमें वह प्रत्येक व्यक्ति शामिल था जो विश्वास का अंगीकार करे, प्रत्येक जिसने बपतिस्मा लिया हो, विश्वासियों के बच्चे और जीवन-साथी, और उनके घरेलू सेवक और दास। उदाहरण के लिए, जब पौलुस ने विभिन्न कलीसियाओं को पत्र लिखा, तो उसने इच्छा की कि उन पत्रों को उस प्रत्येक व्यक्ति को पढ़कर सुनाया जाए जो उन कलीसियाओं के साथ प्रत्यक्ष रूप से संबंधित था। और जैसा कि विश्वासियों को अपने विश्वास को जाँचने के उसके उपदेशों के द्वारा हम देख सकते हैं, कि पौलुस को पूर्ण अपेक्षा थी कि कलीसिया में अविश्वासी होंगे। इसे हम 2 कुरिन्थियों 13:5 जैसे पद्यांशों में देखते हैं। मत्ती 13:24-30 में गेहूँ और खरपतवार के अपने दृष्टान्त में यीशु की भी यही अपेक्षा थी, जहाँ उसने अविश्वासियों को कलीसिया से बाहर न करने के लिए कहा। प्रकाशितवाक्य 2 और 3 अध्यायों में कलीसियाओं को लिखे पत्रों में भी हम इसी बात को देखते हैं, जहाँ यीशु ने निरन्तर उन्हें उत्साहित किया कि वे जय पाएँ और अन्त तक स्थिर रहें। और हम इब्रानियों 6:4-8 और 10:29 जैसे अध्यायों में नई वाचा को तोड़ने के विरूद्ध दी गई चेतावनी में इसी बल को देखते हैं।

एक उदाहरण के लिए, इब्रानियों 10:29 के इन शब्दों को देखें:

> *तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया।* (इब्रानियों 10:29)

इस पद में, इब्रानियों के लेखक ने संकेत दिया कि परमेश्वर के साथ वाचा में पवित्र किए जाने के बाद मसीह को त्यागना संभव था। जैसा कि शेष अध्याय स्पष्ट करते हैं, यहाँ बताया गया दण्ड नरक में अनन्तकालीन कष्ट है।

> *यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि दृश्य कलीसिया में "गेहूँ और जंगली दाने," हमेशा रहेंगे, जैसे यीशु ने कहा। आपके पास सच्चे परमेश्वर के लोग होंगे; आपके पास ऐसे लोग होंगे जो प्रतीत होते हैं। उन चेलों के समान जो यीशु के प्रति वफादार थे, लेकिन उन के बीच यहूदा भी था। पौलुस के साथ भी उसके चेलों के बीच एक देमास था (2तीमु 4:10)। इसलिए, वे स्थानीय कलीसिया में हमेशा रहेंगे।*
> (डॉ. डोनाल्ड विट्नी)

दृश्य कलीसिया के मिश्रित चरित्र का अर्थ है कि हमें कलीसिया में अविश्वास और गलती के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिए। साथ ही, कलीसिया की पवित्रता उस समय भी बनी रहती है जब उसकी सेवकाईयों में अविश्वासी शामिल हों। अत:, हम संस्कारों, परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं का आदर करते हैं। और हम परमेश्वर के पवित्र वचन का आदर करते हैं, चाहे इसका बुरी तरह या पाखण्डपूर्ण रीति से प्रचार किया जाए, जैसा पौलुस ने फिलिप्पियों 1:14-18 में सिखाया। कलीसिया की पवित्रता परमेश्वर की जगह कलीसिया को देखने के विरूद्ध चेतावनी भी है और यह आश्वासन भी कि मानवीय पाप और अविश्वास के बावजूद परमेश्वर कलीसिया को प्रभावशाली रीति से प्रयोग करता है।

दृश्य कलीसिया की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम अदृश्य कलीसिया के विचार को देखें।

अदृश्य कलीसिया

दृश्य कलीसिया में वह प्रत्येक व्यक्ति शामिल है जो परमेश्वर के वाचा के समुदाय का हिस्सा है, जबकि अदृश्य कलीसिया केवल उन लोगों से निर्मित है जो उद्धार में मसीह के साथ संगठित हैं। इस कारण, कई बार इसे "सच्ची कलीसिया" कहा जाता है। हम सोच सकते हैं कि अदृश्य कलीसिया केवल एक छोटा झुण्ड है जो पूर्णत: दृश्य कलीसिया में शामिल है। सामान्यत:, हम दृश्य कलीसिया के अधिकाँश लोगों को सन्देह का लाभ देते हुए, उनसे इस प्रकार व्यवहार करते हैं मानो उन सबने वास्तव में उद्धार पा लिया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि केवल परमेश्वर ही दिल को देख सकता है, जैसा हम भजन 44:21 और प्रेरितों के काम 15:8 जैसे वचनों में देखते हैं। और परिणामस्वरूप, इतिहास के इस चरण में, पूर्ण निश्चितता से केवल परमेश्वर ही अदृश्य कलीसिया को पहचान सकता है। यद्यपि हम मुख्यत: अदृश्य कलीसिया पर ध्यान देंगे जैसे यह किसी भी निश्चित समय में पृथ्वी पर विद्यमान होती है, लेकिन यह जानना महत्वपूर्ण है कि अदृश्य कलीसिया में वह प्रत्येक विश्वासी भी शामिल है जो मसीह की सांसारिक सेवकाई के पूर्व और पश्चात् इस संसार में जीवित रहा।

आम तौर पर, पवित्र वचन दृश्य कलीसिया को संबोधित करता है न कि अदृश्य कलीसिया को, परन्तु यह सामान्यत: अपने श्रोताओं को उनके उद्धार के संबंध में सन्देह का लाभ देता है। इसके कुछ ध्यान देने योग्य अपवाद हैं, जैसे 1 कुरिन्थियों अध्याय 5, और 1 तीमुथियुस 1:19, 20. और प्रकाशितवाक्य 2 और 3 अध्यायों के कुछ पत्र अपने श्रोताओं के बारे में ज्यादा आशावादी नहीं हैं। परन्तु सामान्यत:, पवित्र

वचन के लेखक अपने पाठकों से अपेक्षा रखते थे कि वे परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा रखें और विश्वासयोग्यता से उसकी आज्ञा मानें। इसका लक्ष्य यह था कि हर व्यक्ति विश्वासयोग्य प्रमाणित हो - सम्पूर्ण दृश्य में कलीसिया अदृश्य कलीसिया का हिस्सा हो।

जब यीशु लौटेगा, वह अपनी कलीसिया को पूर्णत: शुद्ध करेगा। वह सारे अविश्वासियों को इस से दूर करेगा, जिस से अदृश्य कलीसिया दृश्य कलीसिया के समान बन जाए। इसे हम मत्ती 7:21-23 और 13:24-30, 1 कुरिन्थियों 3:12-15, और 1 पतरस 4:17-19 जैसे स्थानों पर देखते हैं। परन्तु तब तक, अदृश्य कलीसिया के लोगों की पहचान केवल परमेश्वर को ही होगी।

इस तथ्य के उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं जो स्वयं के मसीही होने का दावा करता है, कि वर्तमान में दृश्य कलीसिया के अन्दर एक अदृश्य कलीसिया है। और सबसे बड़ा निहितार्थ है कि कलीसिया को नियमित रूप से सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि दृश्य कलीसिया में अविश्वासी हैं। और इसका अर्थ है कि कलीसिया की सदस्यता हमारे उद्धार की गारण्टी के लिए पर्याप्त नहीं है। और इस कारण, हमें निरन्तर सिखाना और छुटकारे का सुसमाचार का प्रचार करना है, न केवल दूसरों के लिए बल्कि हमारे लिए भी। हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारी मण्डली के अविश्वासियों को मसीह में आने और अदृश्य कलीसिया का हिस्सा बनने का निमंत्रण दिया जाए।

जब *प्रेरितों का विश्वास-कथन* पुष्टि करता है कि कलीसिया पवित्र है, तो इसका अर्थ है कि कलीसिया परमेश्वर के साथ वाचा में है, इसे परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में अलग किया गया है, यह परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित है। इसका यह भी मतलब है कि कलीसिया का अन्तिम लक्ष्य नैतिक पवित्रता है, और यह भी कि कलीसिया में विश्वासियों का वर्तमान अनुभव उन्हें मसीह की नैतिक पवित्रता में छिपा लेता है। इससे बढ़कर, जब हम स्वयं को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति समर्पित करते हैं, तो हमें निरन्तर हमारे द्वारा किए जाने वाले पापों से शुद्ध किया जाता है, और सिद्ध पवित्रता के लक्ष्य के निकट लाया जाता है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है।

अब जबकि हम कलीसिया की दिब्या स्वीकृति, जो कलीसिया को उसका महत्व और अधिकार देती है, और इस विचार को देख चुके हैं कि कलीसिया परमेश्वर के लिए पवित्र है, तो हम अपने तीसरे बिन्दू के लिए तैयार हैं: यह तथ्य कि कलीसिया सार्वभौमिक या वैश्विक है।

4. सार्वभौमिक

सार्वभौमिक शब्द की हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम "सार्वभौमिक" शब्द की एक परिभाषा देंगे। दूसरा, हम दृश्य कलीसिया की सर्भौमिकता को देखेंगे। और तीसरा, हम अदृश्य कलीसिया की सार्वभौमिकता का रूख करेंगे। आइए "सार्वभौमिक" शब्द की परिभाषा से शुरूआत करें।

परिभाषा

जैसा हमने एक पहले के अध्याय में बताया, सार्वभौमिक शब्द का अर्थ है: वैश्विक; या जिसमें सारी मण्डलियों के सारे मसीही शामिल हों। "कैथोलिक" शब्द लैटिन भाषा के *कैथोलिकस* का अनुवाद है, जो यूनानी संबंध सूचक शब्द *काटा* और विशेषण *होलोस* से लिया गया है, जिनका अर्थ है "सम्पूर्ण" या "पूर्ण।" यह रोमन कैथोलिक कलीसिया का उल्लेख नहीं है। बल्कि, यह विश्वासयोग्यता से मसीह के पीछे चलने वाली सारी कलीसियाओं के बीच विद्यमान एकता का वर्णन है।

इस श्रृंखला के पिछले अध्यायों से आपको याद होगा कि *प्रेरितों के विश्वास-कथन* का जो रूप हमारे पास आज है उसे आरम्भिक बपतिस्मा के विश्वास-कथनों से विकसित किया गया है। इन विश्वास-कथनों के लिखे जाने के समय, संसार भर की विभिन्न मसीही कलीसियाएँ एकल कलीसियाई शासन के अधीन आई

भी नहीं थीं। इसलिए, जब *प्रेरितों का विश्वास-कथन* कलीसिया की सार्वभौमिकता के बारे में बात करता है, तो यह सारी मसीही मण्डलियों के एक संगठन को ध्यान में रखकर नहीं किया गया है। बल्कि, यह पवित्र आत्मा की उस एकता की बात करता है जो हमारी संस्थागत भिन्नताओं के बावजूद, सारी वैध मसीही कलीसियाओं के बीच विद्यमान है। इतिहास के इस चरण में, "कैथोलिक" शब्द सब को शामिल करने वाला था। यह प्रत्येक मसीही मण्डली को "कलीसिया" का नाम देने के लिए था।

यह विचार 1 कुरिन्थियों 1:2 में पौलुस की शिक्षा के अनुरूप था, जहाँ उसने अपने पत्र को इस प्रकार संबोधित किया:

> *परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थियुस में है, अर्थात् उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं।* (1 कुरिन्थियों 1:2)

यहाँ, पौलुस संकेत देता है कि कुरिन्थियुस की विभिन्न कलीसियाएँ जिन्हें वह सामूहिक रूप से "कलीसिया ... जो कुरिन्थियुस में है," एक विस्तृत कलीसिया का हिस्सा थीं जिस में वे सब लोग शामिल थे जो मसीह के नाम को पुकारते थे, चाहे वे कहीं भी रहते हों।

तीसरी सदी के मध्य में, कार्थेज के सिप्रियन ने कलीसिया में बिशप और याजकों की भूमिका पर बल देना शुरू किया। अपनी *पत्री 68* में, उसने कहा:

> *कलीसिया वे लोग हैं जो एक याजक में संगठित हैं ... कलीसिया, जो सार्वभौमिक और एक है, वह अलग या विभाजित नहीं है, परन्तु निस्सन्देह एक-दूसरे के साथ मिलकर रहनेवाले याजकों की सीमेन्ट द्वारा एक साथ जुड़ी और बन्धी हुई है।*

सिप्रियन के लिए, कलीसिया की एकता उसके याजकों और सेवकाई की एकता में थी। इस विचार के बढ़ने के साथ, मसीही भी कलीसिया के शासन की एकता में कलीसिया की एकता की पुष्टि करने लगे। कलीसिया एकमात्र ऐसी *संस्थान* थी जो पूरे संसार में हर जगह विद्यमान थी क्योंकि उसके बिशप और याजक पूरे संसार में थे।

इस बिन्दू पर भी, यद्यपि, "कैथोलिक" शब्द सबको शामिल करने वाला था, जिस में वे सारे लोग और मण्डलियाँ शामिल थीं जो यीशु मसीह के नाम को पुकारती थी और जो कलीसिया के पारम्परिक सिद्धान्तों के प्रति विश्वासयोग्य थे।

लेकिन, बाद में, कलीसिया टुकड़ों में विभाजित हो गई। उदाहरण के लिए, 1054 ईस्वी में रोमन कैथोलिक कलीसिया ने पूर्वी आँर्थोडोक्स कलीसियाओं का बहिष्कार कर दिया और पूर्वी आँर्थोडोक्स कलीसियाओं ने रोमन कैथोलिक कलीसिया का बहिष्कार कर दिया।

उस समय, ये कलीसियाएँ "कैथोलिक" का प्रयोग एक नये विशेष अर्थ में करने लगीं। अपनी कलीसियओं के कैथोलिक या सार्वभौमिक होने का दावा करके, प्रत्येक कलीसिया ने स्वयं की एकमात्र वैध कलीसिया के रूप में पहचान कराना और विरोधी कलीसियाओं को दोषी ठहराना चाहा।

बाद में, 16वीं सदी के धर्म-सुधार आन्दोलन में, अधिकाँश प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाओं ने एक अलग रूख अपनाया। मूलत:, वे "कैथोलिक" शब्द के पहले के सबको शामिल करने वाले अर्थ की अपील करते हुए, विश्वास-कथन के वास्तविक अर्थ की ओर लौटे। पवित्र वचन और *प्रेरितों के विश्वास-कथन* दोनों की सहमति में, प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाओं ने आत्मा की एकता की पुष्टि की जिसमें मसीह के अधिकार के अधीन सारी मसीही कलीसियाएँ शामिल हैं। और उन्होंने पहचाना कि उन में से प्रत्येक *संस्थान* के द्वारा किए गए

सकारात्मक योगदानों को खोए बिना, कलीसिया के शासन के क्षेत्र में एकरूपता के बिना भी इस एकता को बनाए रखा जा सकता है।

आधुनिक संसार में कलीसिया की सार्वभौमिकता को पहचानने का अर्थ है उस प्रत्येक कलीसिया की वैधता की पुष्टि करना जो *प्रेरितों के विश्वास-कथन* में प्रमाणित सिद्धान्तों का पालन करती है। सारी विश्वासयोग्य कलीसियाओं में सारे विश्वासी मसीह की वाचा के अधिकार के अधीन हैं, और सारे सच्चे विश्वासियों को पवित्र आत्मा के वरदान की आशीष दी जाती है। और इस कारण, हमें प्रत्येक विश्वासयोग्य कलीसिया के प्रत्येक सच्चे मसीही के वरदानों से लाभ उठाने के लिए तत्पर रहना चाहिए, और जितना हो सके हमें उनके साथ सेवा करने के लिए इच्छुक होना चाहिए।

"कैथोलिक" शब्द की इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, आइए देखें कि दृश्य कलीसिया को किस प्रकार "कैथोलिक" कहा जा सकता है।

दृश्य कलीसिया

जब हम सार्वभौमिकता की अपनी समझ को दृश्य कलीसिया की अपनी समझ से मिलाते हैं, तो हम दृश्य कैथोलिक कलीसिया को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं: संसार भर के सारे लोगों की संगति जो परमेश्वर के साथ वाचा में मसीह के अधिकार के अधीन हैं। स्पष्टत:, यह संगति आत्मा की है न कि कलीसियाई शासन की। कोई भी ऐसा *संस्थान* नहीं है जिसका शासन सारी मसीही मण्डलियों पर हो। इसके बजाय, दृश्य कलीसिया की एकता इस तथ्य पर आधारित है कि प्रत्येक कलीसिया की उसी परमेश्वर से वाचा है, और वे उसी मसीह की वाचा के अधिकार के अधीन हैं।

ऐतिहासिक रूप से, दृश्य कलीसिया ने अपनी सार्वभौमिकता को विभिन्न तरीकों से खोजा है। कुछ परम्पराओं में, इसका पता कलीसियाई शासन द्वारा लगाया जाता है। कलीसिया जब बढ़ती है तो फैलती है, प्रत्येक नये सेवक को पुराने सेवकों द्वारा सिर पर हाथ रखकर नियुक्त किया जाता है।

परन्तु सामान्यत: प्रोटेस्टेन्ट मसीहियों ने इस बात पर बल दिया है कि सम्पूर्ण कलीसिया की एकता मसीह और आत्मा के कार्य पर हमारे विश्वास पर निर्भर है, न कि नियुक्त सेवकों और याजकों पर। इस कारण, नई मण्डलियाँ कहीं भी खड़ी हो सकती हैं जहाँ आत्मा की एकता विद्यमान है, जहाँ कहीं परमेश्वर के साथ वाचा में बंधे हुए लोग यीशु के नाम में एकत्रित होते हैं। प्रोटेस्टेन्ट बल देते हैं कि दृश्य कलीसिया सार्वभौमिक है क्योंकि यह हर जगह है जहाँ लोग परमेश्वर के साथ वाचा में, मसीह के अधिकार के अधीन, आत्मा की एकता में हैं।

एक सबसे आम समस्या जिसका आज बहुत से मसीही सामना करते हैं वह यह जानना है कि उन्हें मसीह की सार्वभौमिक या वैश्विक कलीसिया के भाग के रूप में किन कलीसियाओं को गले लगाना चाहिए। संसार के अधिकाँश भागों में, विविध प्रकार की कलीसियाएँ हैं जो मसीही होने का दावा करती हैं। एक मसीही प्राय: इन दोनों में से किसी एक चरम की ओर जाता है। या तो वे अपनी बांहों को इतना अधिक फैला लेते हैं कि किसी भी कलीसिया को अपना लेते हैं जो मसीही होने का दावा करती है, या वे अपनी संकुचित रूप में परिभाषित मण्डली या *संस्थान* के अलावा शेष को नकार देते हैं।

इस समस्या का एक सहायक हल कलीसिया के तीन पारम्परिक चिन्हों में पाया जा सकता है। इन चिन्हों का प्रतिपादन 17वीं-सदी स्कॉटलैण्ड में जॉन नॉक्स ने किया, परन्तु ये उस समय की बहुत सी प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाओं के विचारों का प्रतिनिधित्व करते थे। मूलत:, ये चिन्ह मसीहियों को दृश्य सार्वभौमिक कलीसिया की वास्तविक मण्डलियों को पाखण्डी मण्डलियों से अलग पहचान करने में सक्षम बनाते हैं।

> *कलीसिया के चिन्ह इस बात को जानने के लिए अत्यधिक आवश्यक थे कि कलीसिया कहाँ है, क्योंकि वास्तव में, कोई भी स्वयं को कलीसिया कह सकता था। बड़े धर्मविज्ञानी संकटों, जैसे 16वीं सदी के धर्म-सुधार आन्दोलन में, प्रश्न है, "सच्ची कलीसिया कहाँ है?" और इस प्रकार सुधारवादियों ने, उदाहरण के लिए, बहुत सावधानी से यह कहते हुए कलीसिया के चिन्हों को परिभाषित किया, "यह कलीसिया के बाहर का चिन्ह नहीं है। यह भवन का वास्तु-शिल्प नहीं है। हो या नहीं, सर्वप्रथम, वहाँ परमेश्वर के वचन का प्रचार है।" जहाँ परमेश्वर के वचन का सही प्रचार है, वहाँ कलीसिया है। जहाँ नियमों, संस्कारों का उचित पालन किया जाता है, वहाँ कलीसिया है। बाद में चिन्हों में शामिल है, विशेषत:, कलीसिया का अनुशासन - यह समझना कि अनुशासन के चिन्ह के बिना कलीसिया की पवित्रता का आत्मसमर्पण हो जाता है, और अन्त में वह कलीसिया खराई और अपनी पहचान में भी आत्मसमर्पण कर देती है।* (डॉ. आर. अल्बर्ट मोह्लर)

आइए परमेश्वर के वचन के प्रचार से शुरू करके, दृश्य सार्वभौमिक कलीसिया के तीन पारम्परिक चिन्हों में से प्रत्येक को देखें।

ऐसी कोई कलीसिया या *संस्थान* नहीं है जिसका परमेश्वर के वचन पर स्वामित्व, व्याख्या, प्रयोग या घोषणा के बारे में विशिष्ट दावा हो। कुछ कलीसियाएँ और *संस्थान* दावा करते हैं कि केवल उनके पास पवित्र वचन की व्याख्या करने और सिखाने का अधिकार है। कुछ विशेष प्रकाश होने का दावा करते हैं जो बाइबल की उनकी समझ को शेष सब से अधिक सत्य बनाता है। परन्तु कोई भी कलीसिया वचन के प्रचार सहित, किसी भी चिन्ह को सिद्धता से प्रकट नहीं करती है। परमेश्वर ने बाइबल सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया को दी है। और बाइबल को समझने में हमारी सहायता करने के लिए उसने सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया को अपना पवित्र आत्मा दिया है। इन बातों को हम 1 तीमुथियुस 3:15, और इब्रानियों 4:11-13 और 6:4-6 जैसे पद्यांशों में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, पवित्र वचन सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया को परमेश्वर के वचन को पढ़ने, समझने, और सिखाने का उपदेश देता है, जैसा हम मत्ती 28:20, 1 तीमुथियुस 4:17, और 2 तीमुथियुस 2:15 और 3:14-17 में देखते हैं।

कलीसिया का दूसरा चिन्ह बपतिस्मा और प्रभु भोज के संस्कारों का सही प्रबन्ध करना है। ये संस्कार सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया के हैं, न कि केवल किसी एक या दूसरी संस्थान के।

संस्कारों का पवित्र वचन के अनुसार प्रबन्ध करना दृश्य कलीसिया की प्रत्येक मण्डली का सौभाग्य और उत्तरदायित्व है। इसे हम महान आज्ञा में मत्ती 28:19 में बपतिस्मा की आज्ञा, और 1 कुरिन्थियों 1:13-17 बपतिस्मा पर पौलुस की शिक्षा में देखते हैं। इसे हम लूका 22:15-20 में यीशु द्वारा प्रभु भोज की शुरूआत में भी देखते हैं, जहाँ प्रभु ने संकेत दिया कि भोज उसके सम्पूर्ण राज्य के लिए था, उन सबके लिए जो उसकी वाचा के अधिकार के अन्तर्गत आते हैं। इन्ही पद्यांशों के कारण अधिकाँश प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाएँ अन्य कलीसियाओं और संस्थाओं के संस्कारों को मानती और उनकी पुष्टि करती हैं।

दृश्य सार्वभौमिक कलीसिया का तीसरा पारम्परिक चिन्ह औपचारिक कलीसियाई अनुशासन, जैसे बहिष्कार है।

कोई भी मसीही औपचारिक कलीसियाई अनुशासन, विशेषत: बहिष्कार से खुश नहीं होता है। और इस कारण कलीसियाएँ प्राय: औपचारिक अनुशासन का प्रयोग करने से बचती रही हैं। निस्सन्देह, सहनशीलता भी बाइबल की आज्ञा है। गेहूँ और जंगली दानों के दृष्टान्त में, जो मत्ती 13:24-30 में है।

फिर भी, अनुशासन का अपना स्थान है। कई बार व्यक्ति का पाप इतना समस्याप्रद होता है कि उसे अनुशासित किया जाना चाहिए - विशेषत: जब वह कलीसिया और उसकी साख के लिए खतरा बन जाए। ऐसे समयों पर, अनुशासन कलीसिया की सुरक्षा और दोषी को मन फिराव की ओर लाने के लिए होता है। औपचारिक अनुशासन के लिए धर्मशास्त्रीय आधार मत्ती 16:19 और 18:18, यूहन्ना 20:23, और तीतुस

3:10 जैसे पद्यांशों में पाया जा सकता है। और 1 कुरिन्थियों 5:1-13 जैसे पद्यांशों में हम इसके प्रयोग को देखते हैं। सम्पूर्ण कलीसिया मसीह की है और पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए दृश्य कलीसिया के प्रत्येक भाग के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह कलीसियाई अनुशासन के उचित प्रयोग द्वारा मसीह के लोगों की सुरक्षा करे और मसीह के सम्मान का बचाव करे।

कलीसिया के चिन्ह आज भी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। वे इस बात को सुनिश्चित करने में हमारी सहायता करते हैं कि हमारी मण्डलियाँ परमेश्वर के साथ की वाचा में मसीह के अधिकार के अधीन दृश्य सार्वभौमिक कलीसिया की सीमाओं में रहें। वे ढोंगियों और कलीसिया के दुश्मनों की पहचान करने में भी हमारी सहायता करते हैं, ताकि हम मसीहियों को ऐसे समूहों से दूर रहने की चेतावनी दे सकें, और जिस से हम संसार को बता सकें कि ये झूठे समूह हमारे प्रभु और उसके सुसमाचार का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। जब हम सेवकोई करते हैं तो वे हमें संस्थागत सीमाओं के परे भी कार्य करने की प्रेरणा दे सकते हैं। जब हमें पता चलता है कि मसीह की देह हमारी कलीसियाओं या संस्थाओं तक सीमित नहीं है, परन्तु पूरे संसार में फैली है जहाँ मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, तो हमें उस प्रत्येक व्यक्ति को गले लगाने की प्रेरणा मिल सकती है जो दृश्य कलीसिया का हिस्सा है।

अब जबकि हम दृश्य कलीसिया की वैश्विक प्रकृति को देख चुके हैं, आइए अब हम देखें कि अदृश्य कलीसिया किस प्रकार सार्वभौमिक या वैश्विक है।

अदृश्य कलीसिया

जब हम सार्वभौमिकता की अपनी समझ को अदृश्य कलीसिया की अपनी समझ से जोड़ते हैं, तो हम अदृश्य सार्वभौमिक कलीसिया को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं: हर युग के सारे लोग जो उद्धार के लिए मसीह में संगठित हैं। जैसा हमने कहा, अदृश्य कलीसिया दृश्य कलीसिया का छोटा हिस्सा है, इसलिए यह भी सत्य है कि अदृश्य कलीसिया का प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के साथ वाचा में मसीह के अधिकार के अधीन है। परन्तु अदृश्य कलीसिया को पहचानने के लिए, हमारी परिभाषा केवल इस बात पर केन्द्रित है कि यह दृश्य कलीसिया से किस प्रकार अलग है।

अदृश्य कलीसिया की सार्वभौमिकता के बारे में विचार करने के कई तरीके हैं, परन्तु हम केवल दो पर ध्यान देंगे। पहला, अदृश्य कलीसिया वैश्विक है क्योंकि उद्धारकर्ता केवल एक है। और दूसरा, अदृश्य कलीसिया वैश्विक है क्योंकि केवल एक सच्चा धर्म है जो हमें उस उद्धारकर्ता तक पहुँचा सकता है। आइए पहले हम इस विचार को देखें कि उद्धारकर्ता केवल एक है।

एक उद्धारकर्ता

पवित्र वचन स्पष्ट रूप से सिखाता है कि यीशु मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता है जो मनुष्यों के लिए उपलब्ध है। केवल वही है जिस में कभी हमें बचाने की शक्ति थी, और केवल वही एकमात्र है जिस में कभी होगा। जैसे पतरस ने प्रेरितों के काम 4:12 में बल देकर कहा:

> *और किसी के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।* (प्रेरितों के काम 4:12)

केवल यीशु मसीह ही मनुष्यों के लिए उपलब्ध एकमात्र उद्धाकर्ता है। हमारे प्रभु ने स्वयं इस सत्य की घोषणा की जब उसने यूहन्ना 14:6 में ये शब्द कहे:

> *मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।* (यूहन्ना 14:6)

> *केवल यीशु ही वह क्यों है जो हमें बचा सकता है? क्योंकि उद्धारकर्ता को सिद्ध मनुष्य के साथ-साथ सिद्ध परमेश्वर भी होना चाहिए, और यीशु को हमारे स्थान पर खड़ा होने के लिए, हमारा बलिदान बनने के लिए, हमारा स्थानापन्न बनने के लिए, सिद्ध मनुष्य बनना पड़ा, और केवल यीशु ही उस भूमिका को अदा कर पाया। और निस्सन्देह, यह छुटकारे के इतिहास के लिए तैयार किया गया जब परमेश्वर ने दाऊद के सिंह को परमेश्वर के मसीहा और अभिषिक्त जन के रूप में नियुक्त किया। और यीशु दाऊद के बाद आने वाला महान् राजा है, और यीशु इस पद को संभालता है, और इस प्रकार सम्पूर्ण पुराना नियम हमें यीशु के आगमन के लिए तैयार करता है। और केवल यीशु ही है जो अपने लोगों को पूरी तरह पाप से उद्धार देने के मानकों को पूरा करता है।* (डॉ. जॉन फ्रेम)

यीशु प्रेस्बिटेरियन, और बैपटिस्ट, और मेथोडिस्ट, और लूथरन, और रोमन कैथोलिक कलीसियाओं, और पूर्वी ऑर्थोडोक्स, और दृश्य कलीसिया की प्रत्येक *संस्थान* का उद्धारकर्ता है।

केवल एक दृश्य कलीसिया है क्योंकि उद्धार पाया हुआ प्रत्येक व्यक्ति उसी मसीह, उसी उद्धारकर्ता में संगठित है। वह हमारी एकता का स्रोत है। और वह अविभाजित है, इसलिए हम भी अविभाजित हैं।

अदृश्य कलीसिया के सार्वभौमिक या वैश्विक होने के तथ्य से संबंधित दूसरा विचार है कि केवल एक सच्चा धर्म है जो हमें मसीह तक पहुँचा सकता है।

एक धर्म

यह समझना महत्वपूर्ण है कि मसीहियत मुख्यत: उद्धार की एक प्रणाली नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ वाचा का संबंध है। अर्थात्, दूसरे धर्मों के विपरीत, मसीहियत मूलत: उद्धार पाने की विधि नहीं है। इसकी अपेक्षा, यह परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक संबंध है। हाँ, विश्वास एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को सही रखता है। परन्तु यहां पर एक बड़ा सवाल है: जब आप परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं तो आपकी क्या पहचान है? क्या आप परमेश्वर के राज्य के एक विश्वासयोग्य नागरिक हैं? जब परमेश्वर आप को देखता है, तो क्या वह किसी ऐसे व्यक्ति को देखता है जो मसीह की वाचा के लहू में छिपा है? या आप उसके शत्रुओं के राज्य के नागरिक हैं? क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी योग्यता के आधार पर परमेश्वर के सामने खड़ा होता है, और इसलिए आपको अपने पाप का दण्ड भुगतना होगा?

दुःखद रूप से, झूठे धर्मों के लोग शत्रु राज्यों के सदस्य हैं। वे परमेश्वर की वाचा के लोगों के भाग नहीं हैं, और इसलिए वे मसीह के नहीं हैं और न बन सकते हैं। केवल मसीहियत हमें उद्धारकर्ता तक पहुँचा सकती है। इसीलिए बाइबल की मसीहियत इस संभावना का इनकार करती है कि लोग दूसरे धर्मों के द्वारा उद्धार पा सकते हैं, फिर चाहे उन लोगों या धर्मों के इरादे नेक ही क्यों न प्रतीत हों।

> *जैसा हम जानते हैं, बहुत से गैर-मसीही धर्म हैं, जिन्हें कई बार उनके आकार और उनके प्रभाव के कारण "संसार के महान धर्म" कहा जाता है। और प्राय: यह पूछा जाता है कि यदि एक व्यक्ति जो मसीही नहीं है, परन्तु वह संसार के इन दूसरे महान धर्मों में से किसी एक में विश्वासयोग्यता से संलग्न है, वे उस धर्म विशेष के सिद्धान्तों और रिवाजों का पूरी भक्ति से पालन करते हैं, यदि वे अपने व्यवहार में ईमानदार हैं, तो क्या वे स्वर्ग में जायेंगे यद्यपि वे मसीह को नहीं मानते हैं-शायद उन्होंने मसीह के बारे में कभी सुना ही न हो। बाइबल इस बारे में स्पष्ट है। यूहन्ना 14:6 में, इस परिस्थिति के बारे में यीशु बिल्कुल स्पष्ट था। उसने स्वयं के बारे में कहा, "मैं ही मार्ग हूँ; मैं ही सत्य हूँ; मैं ही जीवन हूँ," और यदि यह पर्याप्त स्पष्ट नहीं था तो वह आगे कहता है, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता।"* (डॉ. डोनाल्ड विट्नी)

> *परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह के कारण हम लोगों के जीवनों में हर प्रकार की भलाई को देखते हैं चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों। परन्तु हम लोगों के जीवन में अत्यधिक बुराई भी देखते हैं, और यदि हम परमेश्वर की पवित्रता और मनुष्यों के पाप में पतन को पहचान लें, तो हमे पता चलता है कि परमेश्वर के सामने आने और उसके साथ संबंध में रहने के लिए केवल नैतिक व्यवहार पर्याप्त नहीं है। हम अपनी पापपूर्ण अवस्था में परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। और इसलिए हमें एक छुटकारा देने वाले और उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, न कि केवल धार्मिक रीति-रिवाजों की। और केवल यीशु ही है जो परमेश्वर के साथ पुन: हम संबंध को स्थापित करने का मार्ग उपलब्ध कराता है।* (डॉ. एरिक के. टॉनस)

जैसा हमने बताया, अदृश्य कलीसिया के जीवित सदस्य साधारण रूप से दृश्य कलीसिया में शामिल हैं। इस कारण, बहुत से धर्मविज्ञानियों ने कहा है कि उद्धार उन लोगों के लिए साधारण रूप से संभव नहीं है जो दृश्य कलीसिया के बाहर हैं। अर्थात्, यदि एक व्यक्ति दृश्य कलीसिया का हिस्सा नहीं है, तो उस व्यक्ति के पास उद्धार का कोई साधारण अवसर नहीं है।

आरम्भिक कलीसियाई पुरखे सिप्रियन ने, जो 200-258 ईस्वी में रहा, इसे अपनी पुस्तक *ऑन द यूनिटी ऑफ द चर्च* में इस प्रकार बताया:

> *जो कोई कलीसिया से अलग हो जाता है और व्यभिचारिणी से जुड़ जाता है, वह कलीसिया के वायदों से अलग हो जाता है; न ही मसीह की कलीसिया को त्यागने वाला मसीह के प्रतिफलों को पा सकता है। वह एक अजनबी है; वह अशुद्ध है; वह एक शत्रु है। परमेश्वर उस व्यक्ति का पिता नहीं रह सकता, जिसके पास माता के रूप में कलीसिया नहीं है।*

यहाँ, सिप्रियन उन लोगों के विरूद्ध तर्क दे रहा था जिन्होंने दृश्य कलीसिया को छोड़ दिया था। और उसका कहना था जब तक आप दृश्य कलीसिया के भाग नहीं हैं तब तक मसीह के प्रतिफलों को पाने के लिए अदृश्य कलीसिया में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। यह तर्क उसके अनुरूप है जो हमने कहा कि दृश्य कलीसिया परमेश्वर के साथ वाचा में बंधी है।

और मामले का तथ्य यह है कि उद्धार भी परमेश्वर की वाचा की आशीष है। इसे में यिर्मयाह 31:31-34, लूका 1:69-75, रोमियों 11:27, इब्रानियों 7:22-25, और बहुत से अन्य स्थानों पर देख सकते हैं। एक उदाहरण के रूप में, लूका 22:20 में यीशु के वचनों को सुनें, जब उसने प्रभु भोज की शुरूआत की:

> *यह कटोरा मेरे उस लहू में नई वाचा है जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।* (लूका 22:20)

अपने पकड़े जाने की रात, यीशु ने कहा कि हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने वाला उसका लहू एक वाचा होगा। दूसरे शब्दों में, मसीह के लहू में उद्धार केवल उसकी वाचा के द्वारा है।

चूंकि परमेश्वर की वाचा दृश्य कलीसिया के साथ है, इसलिए उद्धार साधारण रूप से दृश्य कलीसिया के *द्वारा* है। यह तब होता है जब दृश्य कलीसिया में लोग विश्वास में आते हैं, या सुसमाचार प्रचार के द्वारा दृश्य कलीसिया मन फिराने वालों को प्राप्त करती है। निस्सन्देह, कई बार लोग कलीसिया के साथ बिना किसी सम्पर्क के भी उद्धार पाते हैं। परन्तु जब ऐसा होता है, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि कुछ असामान्य - कुछ *असाधारण* हो रहा है।

अदृश्य कलीसिया के वैश्विक होने के कारण, केवल वे ही लोग उद्धार पा सकते हैं जो परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य हैं। इस बात की कोई आशा नहीं है कि दूसरे धर्मों के लोग अपने स्वयं के धर्मों के शिक्षा के अनुसार भले बनने के द्वारा स्वर्ग में पहुँचेंगे। हमें सुसमाचार प्रचार करना है। हमें लोगों को एकमात्र उद्धारकर्ता के बारे में बताना है। हमें उन्हें एकमात्र वाचा के समुदाय, परमेश्वर के पृथ्वी के राज्य में लाना है, और उन्हें इसके प्रभु और राजा से प्रेम करना और उसकी आज्ञा मानना सिखाना है। अदृश्य कलीसिया की सार्वभौमिकता हम सब उद्धार पाए हुए लोगों के लिए एक बड़ी प्रेरणा है - यह मसीह में हमारी एकरूपता है। परन्तु यह उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक भयानक चेतावनी भी है जो मसीह में नहीं आया है।

अब तक कलीसिया पर हमारे अध्याय में, हमने कलीसिया की दिब्या स्वीकृति को देखा, और हमने देखा कि कलीसिया पवित्र और सार्वभौमिक, या वैश्विक दोनों है। अब, हम अपने अन्तिम मुख्य विषय पर आने के लिए तैयार हैं: यह विचार कि कलीसिया सन्तों की संगति है।

5. संगति

“पवित्र” शब्द के उपर हमारी चर्चा में, हमने देखा कि सन्त शब्द सामान्य अर्थ में उस प्रत्येक व्यक्ति को बताता है जो दृश्य कलीसिया में है, और विशेष अर्थ में उस प्रत्येक व्यक्ति को जो अदृश्य कलीसिया में है। अत:, जब हम सन्तों की संगति की बात करते हैं, तो हम अपने ध्यान को उस शब्द पर केन्द्रित करेंगे जिस की हमने अब तक जाँच नहीं की है, वह है संगति।

प्रेरितों के विश्वास-कथन के प्राचीन यूनानी अनुवादों में, संगति के लिए *कोइनोनिया* शब्द है। पवित्र वचन आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग उस संगति के लिए करता है जो कलीसिया के सदस्यों के बीच है, विशेषत: परमेश्वर के साथ उनकी एकता के द्वारा। इसे हम प्रेरितों के काम 2:42, 2 कुरिन्थियों 13:14, और 1 यूहन्ना 1:3 जैसे अध्यायों में देखते हैं।

नया नियम प्राय: वस्तुओं और धन को आपस में बाँटने के लिए भी *कोइनोनिया* शब्द का प्रयोग करता है। इसे हम रोमियों 15:16, 2 कुरिन्थियों 9:13, और इब्रानियों 13:16 में देखते हैं। इसे सुसमाचार को बाँटने का वर्णन करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है, सुसमाचार प्रचार नहीं, बल्कि कलीसिया में एक-दूसरे के साथ, जैसे फिलिप्पियों 1:5 और फिलेमोन पद 6 में।

इन विचारों के अनुसार, विश्वास-कथन के “संगति” शब्द को पारम्परिक रूप से कलीसिया के सदस्यों के बीच संगति को बताने के लिए लिया जाता रहा है; उन वस्तुओं को आपस में बाँटने में जो हमारे बीच साझे की हैं; और हमारी आपस में उन पर निर्भरता जो हमारे साथ बाँटते हैं।

जब हम सन्तों की संगति को देखते हैं, हम अपनी चर्चा को एक विशेषता पर संगठित करेंगे जो अब तक परिचित हो गई होगी। पहला, हम उस संगति को देखेंगे जो दृश्य कलीसिया के अन्दर विद्यमान है। और दूसरा, हम उस संगति को देखेंगे जो अदृश्य कलीसिया के अन्दर विद्यमान है। आइए दृश्य कलीसिया के अन्दर सन्तों की संगति से शुरू करें।

दृश्य कलीसिया

दृश्य कलीसिया में विद्यमान संगति के बहुत से पहलू हैं, लेकिन हम केवल तीन पर ध्यान देंगे: पहला, अनुग्रह के साधन; दूसरा, आत्मिक वरदान; और तीसरा, भौतिक वस्तुएँ। आइए हम अनुग्रह के साधन से शुरू करें।

अनुग्रह के साधन

अनुग्रह के साधन वे औजार या उपकरण हैं जिनका परमेश्वर सामान्यत: अपने लोगों को अनुग्रह देने के लिए प्रयोग करता है। जाँन वेस्ली, मेथोडिस्ट कलीसिया के संस्थापकों में से एक, ने अनुग्रह के साधनों का इस प्रकार वर्णन किया जो बहुत सी मसीही परम्पराओं को प्रतिबिम्बित करता है। देखें मलाकी 3:7 के आधार पर, अपने *उपदेश* संख्या 16 में उसने क्या लिखा:

> *"अनुग्रह के साधनों" से मैं उन बाहरी चिन्हों, शब्दों, या कार्यों को समझता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने ठहराया है, और इस उद्देश्य के लिए नियुक्त हैं, कि वे साधारण माध्यम बनें जिनके द्वारा वह मनुष्यों का अपना बचाने वाला, धर्मी ठहराने वाला, या शुद्ध करने वाला अनुग्रह देता है।* (जाँन वेस्ली)

> *अनुग्रह के साधन, जिन्हें कुछ लोग उस परम्परा के आधार पर जिस से वे संबंधित हैं, आत्मिक कार्य या श्रद्धा के कार्य कहते हैं, जब मैं यह वाक्यांश सुनता हूँ, "वे कैसे कार्य करते हैं?" तो जो मैं हमेशा कहना चाहता हूँ वह है, "वे कार्य नहीं करते हैं। परमेश्वर कार्य करता है; परमेश्वर का अनुग्रह कार्य करता है।" परन्तु अनुग्रह के साधन हमें उस अनुग्रह को पाने और बढ़ाने के अवसर प्रदान करते हैं। वे हमारे जीवनों में कार्यरत् परमेश्वर के अनुग्रह पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए समय और स्थान उत्पन्न करते हैं। उन्हें पाईप लाईन के रूप में देखना मुझे अच्छा लगता है। हम पाईप और पानी के बीच असमंजस में नहीं पड़ना चाहते हैं। हम जीवन के जल को पाना चाहते हैं। परन्तु पाईप लाईन उस पानी को हम तक पहुँचाने में सहायता करती है। और हम उस पानी को पी सकते हैं, अनुग्रह के साधन हमें जीवन के जल में से पीने में सक्षम बनाते हैं।* (डाँ. स्टीव हार्पर)

व्यवहारिक रूप से, बहुत से साधन हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमें अनुग्रह देता है, जिन में ये शामिल हैं जैसे विपरीत परिस्थितियाँ और कष्ट, विश्वास, परोपकार, और स्वयं संगति। परन्तु पारम्परिक रूप से, धर्मविज्ञानियों ने विशेषत: तीन अनुग्रह के साधनों पर ध्यान दिया है: परमेश्वर का वचन, बपतिस्मा और प्रभु भोज के संस्कार, और प्रार्थना। ये सारे अनुग्रह के साधन सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया के हैं, जिस में उसके विश्वासी और अविश्वासी दोनों हैं।

वेस्टमिन्स्टर लघु प्रश्नोत्तरी, मसीही शिक्षा का एक पारम्परिक प्रोटेस्टेन्ट साराँश, अपने प्रश्न और उत्तर संख्या 88 में अनुग्रह के साधनों का इस प्रकार वर्णन करती है:

> *प्र: वे कौन से बाहरी साधन हैं जिनके द्वारा मसीह हमें छुटकारे के लाभ प्रदान करता है?*
>
> *उ: बाहरी साधन जिनके द्वारा मसीह हमें छुटकारे के लाभ प्रदान करता है, वे हैं उसके नियम, विशेषत: वचन, संस्कार, और प्रार्थना; इन सबको चुने हुओं के उद्धार के लिए प्रभावी बनाया जाता है।*

पवित्र वचन रोमियों 10:14, 1 कुरिन्थियों 10:17, और 1 पतरस 3:12 और 21 जैसे स्थानों पर इन अनुग्रह के साधनों के लाभों के बारे में बात करता है।

अब, यद्यपि छुटकारे के लाभ केवल उनके लिए है जिन्होंने उद्धार पाया है, अर्थात्, केवल अदृश्य कलीसिया के लिए, लेकिन नियम सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया के लिए हैं। याद रखें, अदृश्य कलीसिया बिल्कुल यही है: अदृश्य। हम नहीं जानते उस में कौन है। उसकी कोई अलग ़आराधना सभा नहीं होती। इसके अलग से कोई सेवक नहीं हैं। इसका अपना कलीसियाई शासन नहीं है। ये बातें *दृश्य* कलीसिया के लिए

नियुक्त हैं। इसी प्रकार, हमारे सारे अनुग्रह के साधन - हमारे प्रचार, बपतिस्मा, प्रभु भोज, और प्रार्थनाएँ - दूसरों के द्वारा भी किए जा सकते हैं। वे दृश्य हैं। ये वे बातें हैं जिन में दृश्य कलीसिया सामान्य रूप से भाग लेती है, और इसलिए वे दृश्य कलीसिया की *संगति* के भाग हैं।

अनुग्रह के साधन सदा से महत्वपूर्ण आदेश रहे हैं जिनके द्वारा परमेश्वर सामान्यत: छुटकारे की आशीषों को हमारे जीवनों में लागू करता है, और हमें उनका पूरा लाभ उठाना चाहिए। हमें सुसमाचार प्रचार करना चाहिए जो परिवर्तन लाए, और वचन सिखाना चाहिए जो बुद्धि और परिपक्वता लाए। हमें संस्कारों को मनाना चाहिए जो दृश्य रूप में सुसमाचार प्रस्तुत करते हैं और परमेश्वर की वाचा में हम पर मोहर लगाते हैं। और हमें परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा, लोगों के परिवर्तनों और परिपक्वता, पाप का सामना करने में सहायता के लिए, बुराई से सुरक्षा के लिए, और जरूरत के समय हमारे बचाव के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। इन सारे तरीकों में और इनसे बढ़कर, अनुग्रह के साधन दृश्य कलीसिया की अनमोल सेवकाईयाँ हैं।

अनुग्रह के साधनों के अतिरिक्त, दृश्य कलीसिया में आत्मिक वरदान भी हैं।

आत्मिक वरदान

अब, यह समझना महत्वपूर्ण है कि जब हम कहते हैं कि आत्मिक वरदान सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया के हैं, तो हम यह नहीं कह रहे हैं कि दृश्य कलीसिया के प्रत्येक व्यक्ति में पवित्र आत्मा वास करता है। नहीं। केवल विश्वासियों में पवित्र आत्मा वास करता है। पवित्र आत्मा दृश्य कलीसिया की उन्नति के उद्देश्य से सारे आत्मिक वरदानों का प्रयोग करता है। कुछ लोगों के लिए, इसका मतलब है, अपने पवित्रीकरण को बढ़ाना और परिपक्वता की ओर बढ़ना। दूसरों के लिए, इसका मतलब है उन्हें पहले विश्वास में लाना। परन्तु सारे मामलों में, दृश्य कलीसिया के प्रत्येक व्यक्ति का आत्मिक वरदानों से सामना होता है, और उन्हें कुछ हद तक उन में भाग लेने की अनुमति भी दी जाती है। और इस कारण, यह कहना सही है कि आत्मिक वरदानों में सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया द्वारा भाग लिया जाता है।

सम्पूर्ण दृश्य कलीसिया द्वारा आत्मिक वरदानों में शामिल होने को कई रीतियों से प्रकट किया जाता है। पहला, उनका प्रयोग सार्वजनिक आराधना सभाओं में किया जाता है। इसे हम 1 कुरिन्थियों 14:13-26 में स्पष्ट रूप से देखते हैं। दूसरा, वरदान सम्पूर्ण कलीसिया की उन्नति के लिए दिए जाते हैं। इसे हम 1 कुरिन्थियों 12:4-7 और इफिसियों 4:3-13 जैसे स्थानों पर देख सकते हैं। तीसरा, पौलुस ने विशेष रूप से कहा कि अन्य भाषा कलीसिया के अन्दर अविश्वासियों के लिए भी एक चिन्ह है, जिसे हम 1 कुरिन्थियों 14:21-22 में पढ़ते हैं। चौथा, इब्रानियों 6:4-6 में आत्मिक वरदानों से लाभ उठाने में असफल होने के लिए कलीसिया के अन्दर अविश्वासियों को दोषी ठहराया गया है। इन तरीकों से, पवित्र वचन इसे स्पष्ट करता है कि विश्वासी और अविश्वासी एक समान कलीसिया के आत्मिक वरदानों में हिस्सेदार हैं।

अनुग्रह के साधनों के समान, आत्मिक वरदान आधुनिक दृश्य कलीसिया के लिए बहुत लाभदायक हैं। वे सच्चाई की घोषणा करने और खोए हुओं को परिवर्तित करने में उपयोगी हैं। वे विश्वासियों को विश्वास और परिपक्वता में बढ़ने में सहायता के लिए उपयोगी हैं। और बहुत से वरदान, जैसे करूणा और मेजबानी, परमेश्वर के लोगों की सांसारिक जरूरतों को पूरा करने में उपयोगी हैं। जब कभी पवित्र आत्मा अपने लोगों को वरदान देता है, तो हमे उन्हें प्रेरित करना चाहिए कि वे सबकी भलाई के लिए उन वरदानों का उपयोग करें, और उन्हें दृश्य कलीसिया में किसी से रोकें नहीं।

संगति दृश्य कलीसिया में इस रूप में भी विद्यमान है कि सदस्य अपनी भौतिक वस्तुओं को आपस में बाँटते हैं।

भौतिक वस्तुएँ

बाइबल और आरम्भिक कलीसिया में संगति या *कोइनोनिया* का एक अर्थ यह भी है कि मसीही लोग अपनी भौतिक वस्तुओं को दृश्य कलीसिया के जरूरतमन्द लोगों में बाँटते थे। निर्धनों के लिए दान एकत्रित करने के लिए प्राय: *कोइनोनिया* शब्द का प्रयोग किया जाता था, जैसे रोमियों 15:26, 2 कुरिन्थियों 8:4, 9:13, और इब्रानियों 13:16 में।

जब *कोइनोनिया* शब्द का प्रयोग न भी हो, तब संगति के इस पहलू को आरम्भिक मसीहियों के व्यवहार में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, बहुत से आरम्भिक मसीहियों ने अपनी सम्पत्तियों को बेचा और धन को कलीसिया में दे दिया, जैसा हम प्रेरितों के काम 2:44 और 45, और 4:34 और 35 में देखते हैं। आरम्भिक कलीसिया में, कुछ वीर मसीहियों ने दूसरों को मुक्त करने या निर्धनों को खिलाने के लिए धन एकत्रित करने हेतु स्वयं को गुलामी में बेच दिया।

आरम्भिक कलीसियाई पुरखे क्लेमेन्ट ने, जो 30-100 ईस्वी में रहा, इस व्यवहार के बारे में *1 क्लेमेन्ट* के नाम से ज्ञात पत्र में लिखा, जिसे उसने कुरिन्थियों को लिखा था। उस पत्र के अध्याय 55 से इन शब्दों को देखें:

> *हम जानते हैं कि हमारे बीच में बहुत से लोगों ने अपने आप को बंधनों में दे दिया है, ताकि वे दूसरों को छुड़ा सकें। बहुतों ने, अपने आप को दास के रूप में बेच दिया है, ताकि स्वयं के लिए प्राप्त उस मोल से, वे दूसरों को भोजन उपलब्ध करा सकें।* (क्लेमेन्ट)

आरम्भिक कलीसिया में संगति का विचार इतना अधिक मजबूत था, और विश्वासी दूसरों को खुद से इतना अधिक मान देते थे, कि वे न केवल अपनी सम्पत्तियों को बाँटने के लिए तैयार थे, बल्कि दूसरों को देने की खातिर अपनी आजादी का भी बलिदान करने के लिए तैयार थे।

2 कुरिन्थियों 8:3-5 में पौलुस के वचन उनकी सोच को स्पष्ट करते हैं। देखें वह वहाँ क्या लिखता है:

> *उन्होंने अपनी सामर्थ भर वरन सामर्थ से भी बाहर मन से दिया। और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में हम से बार बार बहुत विनती की ...उन्होंने प्रभु को, फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने आपको दे दिया।* (2 कुरिन्थियों 8:3-5)

इस पद्यांश में, पौलुस ने मकिदूनिया की कलीसियाओं की उदारता का वर्णन किया। और उसने बताया कि यह प्रभु के प्रति उनका समर्पण था जिस के कारण उन्होंने इतने त्यागपूर्वक प्रभु की दृश्य कलीसिया के साथ बाँटा।

जरूरतमन्द लोगों के साथ भौतिक वस्तुओं को बाँटना दृश्य कलीसिया के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। सम्पूर्ण कलीसिया परमेश्वर के लोग, उसकी वाचा का समुदाय है। वह उस में से प्रत्येक को संभालता है, हमसे भी ऐसा ही चाहता है। सरल शब्दों में, जो कुछ हमारे पास है वह प्रभु का है। उसने हमें अपनी सम्पत्ति का केवल भण्डारी बनाया है। और इसका अर्थ है कि हमारा परोपकार और देना प्रभु की अपने लोगों के प्रति सेवकाई है, और संसार के लिए उसके सुसमाचार की गवाही है। अत:, यदि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य बनना चाहते हैं, तो हमें प्रभु की सम्पत्ति को उसके लोगों से रोकना नहीं चाहिए जिन्हें इसकी जरूरत है।

अब जबकि हम दृश्य कलीसिया में सन्तों की संगति को देख चुके हैं, तो हम अदृश्य कलीसिया में संगति को देखने के लिए तैयार हैं।

अदृश्य कलीसिया

हम अदृश्य कलीसिया में सन्तों की संगति से संबंधित दो मुख्य विचारों को देखेंगे। पहला, हम मसीह में सारे विश्वासियों की एकता के बारे में बात करेंगे। और दूसरा, हम अदृश्य कलीसिया में दूसरे विश्वासियों के साथ हमारी एकता के बारे में बात करेंगे। आइए पहले मसीह के साथ हमारी एकता को देखें।

मसीह के साथ एकता

नया नियम निरन्तर वर्णन करता है कि विश्वासी मसीह में एक हैं। इस विचार को सर्वाधिक साधारण रूप में यह कहने के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है कि विश्वासी "मसीह में," या "यीशु में," या "उस में" हैं। एक तरफ, इस एकता का मतलब है कि यीशु पिता के सम्मुख विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करता है, विशेषत: अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान में। परन्तु दूसरी तरफ, इसका मतलब है कि विश्वासियों की महत्वपूर्ण रीति से यीशु के साथ रहस्यमयी एकता है। यीशु विश्वासियों में वास करता है, और वे उस में वास करते हैं।

> *मेरा विचार है कि प्रेरित पौलुस की मुख्य शिक्षाओं में से एक विशेषत: यह है कि हम यीशु मसीह के साथ एक हैं, हम उसके हैं। जब हम बाइबल के सारे प्रकाशन को देखते हैं, तो मेरा विचार है कि बाइबल सिखाती है कि या तो हम आदम में हैं या हम मसीह में हैं। निस्सन्देह आदम पहला मनुष्य था। सारे मनुष्य आदम के पुत्र और पुत्रियाँ हैं। और इसलिए वे संसार में पापियों के रूप में आते हैं। उन में पाप का स्वभाव है। वे परमेश्वर से दूर हैं। उद्धार पाने और छुटकारा पाने और मसीह में भरोसा करने का अर्थ है मसीह में शामिल किया जाना, मसीह का होना। मसीह के साथ एक होने का अर्थ है उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बनना।* (डॉ. टॉम श्रेनर)

> *मसीह के साथ एक होने के द्वारा हम मसीह के सारे लाभों को प्राप्त करते हैं। ऐतिहासिक रूप से इन लाभों को हम इन नामों से जानते हैं: धर्मी ठहराया जाना, पवित्रीकरण, और लेपालकपन - सारी बातें जिन्हें हम उद्धार में प्राप्त करते हैं। उन्हें केवल मसीह में प्राप्त किया जाता है। और इसलिए, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है, यह हमारे लिए आवश्यक है, कि इन लाभों को प्राप्त करने के लिए हम मसीह के साथ एक हों। और हम इन लाभों को कैसे प्राप्त करते हैं, या कैसे हम मसीह के साथ एक होते हैं? हम विश्वास के द्वारा एक होते हैं, केवल विश्वास के द्वारा। यह विश्वास ही है जो हमें मसीह में एक बनाता है, विश्वास का वरदान जो परमेश्वर से आता है।* (डॉ. जेफ्री जू)

धर्मविज्ञानी प्राय: यीशु और विश्वासियों के बीच इस एकता को रहस्यवादी कहते हैं क्योंकि बाइबल नहीं बताती कि यह कैसे होता है। परन्तु पवित्र वचन इस बात को स्पष्ट करता है कि इस एकता में हमारी देह और आत्मा दोनों शामिल हैं। इसे हम यूहन्ना 15:4-7, रोमियों 8:9-11, और बहुत से अन्य स्थानों में देखते हैं। एक उदाहरण कि लिए, 1 कुरिन्थियों 6:15-17 में पौलुस के शब्दों को देखें:

> *क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं? ... जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।* (1 कुरिन्थियों 6:15-17)

चार्ल्स स्पर्जन, प्रसिद्ध बैपटिस्ट प्रचारक जो 1834-1892 में रहे, ने इफिसियों 5:30 के आधार पर अपने सन्देश *अतुल्य रहस्य* में मसीह के साथ हमारी एकता के बारे में बताया। देखें उन्होंने क्या कहा:

> *हमारे और मसीह के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है... यह एकता नहीं है; यह पहचान है। यह साथ जुड़ने से कहीं बढ़कर है; यह हिस्सा बनाना है, सम्पूर्ण का एक आवश्यक हिस्सा... मसीह के पास उसके लोग होने चाहिए; वे उसके लिए आवश्यक हैं।* (चार्ल्स स्पर्जन)

यह सोचना अद्‌भुत है कि मसीह के साथ हमारी एकता इतनी महत्वपूर्ण है कि स्वयं मसीह को हानि होगी यदि हमें उस से अलग कर दिया जाए। वह हम से प्रेम करता है, और मरा कि हम उसके प्रतिफल, उसकी मीरास बनें। हम उस में एक हैं, इसलिए प्रत्येक विश्वासी को हमारे उद्धार में बड़ी सुरक्षा, क्षमा का बड़ा आश्वासन, और परमेश्वर के सामने हमारे सही खड़े रहने के प्रति बड़ी प्रेरणा को महसूस करना चाहिए। हमें इस एकता से सामर्थ पानी चाहिए, मसीह के द्वारा पुष्ट होना चाहिए, उसके आत्मा के द्वारा स्थिर रहना चाहिए। और हमें परमेश्वर के साथ हमारी संगति में निडर रहना चाहिए, यह जानते हुए कि हम मसीह में छिपे हैं, इसलिए हम पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा की नजरों में सिद्ध हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे हमारे पापों के लिए हमें अनुशासिन नहीं करेंगे। परन्तु इसका मतलब है कि जब वे ऐसा करते हैं, तो यह एक प्रेम का कार्य होगा, जो हमें परमेश्वर के साथ सदा की संगति के उपयुक्त बनाने के लिए हमें परिपक्व और सिद्ध बनाने के लिए होगा।

अब जबकि हम मसीह के साथ विश्वासियों की एकता को देख चुके हैं, अब हम मसीह में दूसरे विश्वासियों के साथ हमारी एकता को देखने के लिए तैयार हैं।

विश्वासियों के साथ एकता

अदृश्य कलीसिया का प्रत्येक व्यक्ति मसीह में एक है, इसलिए विश्वासी भी उस में आपस में एक हैं। इसे हम रोमियों 12:5, गलातियों 3:26-28, इफिसियों 4:25, और कई अन्य स्थानों पर देखते हैं। देखें यीशु यूहन्ना 17: 22 और 23 में इस संगति के बारे में पिता से किस प्रकार कहता है:

> *और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।* (यूहन्ना 17:22-23)

दृश्य कलीसिया के साथ हमारी एकता संबंध और व्यवहार की है, जबकि अदृश्य कलीसिया के साथ हमारी एकता आत्मिक और सात्विक है। हमारे अस्तित्व मसीह और उसके आत्मा के द्वारा आपस में बुने हुए हैं। परिणामस्वरूप, मसीह में हम सब की बराबर प्रतिष्ठा है, जैसे पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:14-16, गलातियों 3:28, और कुलुस्सियों 3:11 में सिखाया। और हम एक-दूसरे की खुशियों और दर्द को भी महसूस करते हैं, जैसा हम 1 कुरिन्थियों 12:26 में पढ़ते हैं।

और अदृश्य कलीसिया की संगति पृथ्वी पर कलीसिया तक सीमित नहीं है; यह स्वर्ग की कलीसिया तक जाती है, उन विश्वासियों तक जो पहले ही मर चुके हैं और प्रभु के साथ हैं। जिस प्रकार पृथ्वी के विश्वासियों की मसीह में और मसीह के द्वारा आपस में एक रहस्यमयी संगति है, वही संगति हमारी उस प्रत्येक व्यक्ति के साथ है जो मसीह में एक है - उन विश्वासियों सहित जो अब स्वर्ग में हैं। पवित्र वचन इब्रानियों 11:4 और 12:22-24 जैसे स्थानों में इस विचार को सिखाता है।

इस तथ्य को सिखाने के लिए वचन कलीसिया के लिए मसीह की दुल्हन के चित्र का प्रयोग करता है। दृश्य कलीसिया के साथ मसीह की दुल्हन के रूप में व्यवहार किया जाता है, परन्तु यह हमेशा उसे अदृश्य कलीसिया की दुल्हन की सिद्धता तक पहुँचाने के लिए है। इसे हम यशायाह 54:5-8, होशे 2:19-

20, और इफिसियों 5:26 और 27 में देखते हैं। और इन रूपों की पूर्णता प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 में सिद्ध अदृश्य कलीसिया में प्रकट होती है।

प्रकाशितवाक्य 19:6-8 में यूहन्ना के दर्शन के वर्णन को देखें:

> *फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लेलूय्याह, इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेमने का ब्याह आ पहुंचा: और उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है। और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।*
> (प्रकाशितवाक्य 19:6-8)

यहाँ हम मसीह की दुल्हन को जिस में हर युग के छुड़ाए हुए संत हैं, एक-दूसरे के साथ संगति में देखते हैं। हम सब एक विवाह का वस्त्र पहनकर जो प्रत्येक विश्वासी के धर्म के कार्यों से निर्मित है, एक के रूप में खड़े होंगे।

पवित्र वचन इस तथ्य से कई प्रयोगों को निकालता है कि विश्वासी मसीह में एक-दूसरे से जुड़े हैं। यह हमें सिखाता है कि प्रत्येक विश्वासी मूल्यवान है और मसीह के लिए अत्यावश्यक भी है। यह हमें सिखाता है कि हम एक-दूसरे का आदर करें, और एक-दूसरे की सेवा करें। यह हमें सिखाता है कि हम एक-दूसरे पर तरस खाएँ, दयालु बनें, नम्र और धीरज रखें और क्षमा करें। यह हमें सिखाता है कि हम दूसरों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमसे व्यवहार करें और जैसा हम अपने आप से व्यवहार करते हैं। मसीह के द्वारा उनके साथ हमारी एकता के कारण वे हमारी देह के समान ही हमारा हिस्सा हैं।

6. उपसंहार

प्रेरितों के विश्वास-कथन के इस अध्याय में, हमने कलीसिया के सिद्धान्त का अवलोकन किया। हमने परमेश्वर के विशेष समुदाय के रूप में कलीसिया की दिब्या स्वीकृति को देखा। हमने इस तथ्य पर विचार किया कि कलीसिया पवित्र है, अलग की गई है और शुद्ध है। हमने इसकी सार्वभौमिक या वैश्विक प्रकृति के बारे में बात की। और हमने बताया कि किस प्रकार यह सन्तों की संगति है।

आधुनिक मसीहियों के रूप में, कलीसिया का हमारा अनुभव प्राय: उस से बहुत अलग होता है जैसा बाइबल के दिनों में था, या जैसा *प्रेरितों के विश्वास-कथन* को बनाए जाने के समय था। परन्तु कलीसिया के जीवन की आधारभूत वास्तविकताओं में कोई अन्तर नहीं आया है। कलीसिया अब भी परमेश्वर की वाचा का जन-समूह है। यह अब भी संसार तक सुसमाचार को पहुँचाने, और संसार को पृथ्वी पर उसके राज्य की ओर मोड़ने के लिए उसका चुना हुआ पात्र है। हम, कलीसिया, प्रभु के लिए पवित्र हैं। हम उसके राज्य हैं। हम उसके लोग हैं, आपस में एक दूसरे के साथ उस में जुड़े हुए हैं। और प्रभु स्वयं हमारे द्वारा कार्य कर रहा है।